ब्रजकी झाँकी

(यात्रा)

लेखक—

गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य

मुद्रक तथा प्रकाशक
घनश्यामदास जालान
गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० १९९० प्रथम संस्करण ३२५०
सं० १९९१ द्वितीय संस्करण ३०००
सं० १९९३ तृतीय संस्करण ३०००
सं० १९९४ चतुर्थ संस्करण ४०००
सं० १९९६ पञ्चम संस्करण ३०००
सं० १९९७ षष्ठ संस्करण ३०००
सं० १९९८ सप्तम संस्करण ५०००
सं० २००० अष्टम संस्करण ३०००
सं० २००० नवम संस्करण ५०००

टोटल ३२२५०

पता—
गीताप्रेस, गोरखपुर

मूल्य ।) चार आना

श्रीहरि

विषय-सूची

श्रीहरिः

चित्र-सूची



उपोद्घात

राधानाथसमारम्भां श्रीविष्णुस्वामिमध्यमाम् ।
असदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

यह ब्रजमण्डल गोलोक भूमि है। गो, गोप, गोपीगण परिवेष्टित, अखण्डब्रह्माण्डनायक, कन्दर्पकोटिलावण्य, मुरलीवादननिरत कमलदल-लोचन श्यामसुन्दर श्रीकृष्णकी जो और जैसी लीलाएँ गोलोकधाममें होती हैं वे और वैसी ही लीलाएँ इस ब्रजमण्डलमें होती हैं, ऐसा ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, गर्गसंहिता आदि ग्रन्थोंमें उल्लेख है। इसीसे किसी महानुभावने मथुराकी महत्ताको देखकर कहा था कि—

मथुरेति त्रिवर्णीय त्रयीतोऽपि गरीयसी ।
मा धावति परं ब्रह्म ब्रह्म तामनुधावति ॥

म-थु-रा ये तीन वर्ण वेदत्रयीसे भी अधिक हैं, क्योंकि वेदत्रयी तो ब्रह्मके पीछे दौड़ती है और ब्रह्म मथुराके पीछे दौड़ता है। एक भक्तशिरोमणि महात्मा वृन्दावनकी अलौकिकताको निरखकर कह उठे कि—

वेदद्रुमे मृगय मा वृन्दाविपिने द्रुमे द्रुमे पश्य ।
यद्व्रजवनिता भूत्वा श्रुतिभिरिहैवावलोकित ब्रह्म ॥

'वेदरूपी वृक्षमें ब्रह्मको मन ढूँढ़, किन्तु वृन्दावनमें पेड़-पेड़में देख ले, क्योंकि श्रुतियोंने व्रजबाला बनकर यहाँ ही तो ब्रह्मको देखा था।' महावनमें एक बार दोनों भाई राम-श्याम घुटुअन चलते-चलते नन्द महलके द्वारपर पहुँच गये, दाऊजी तो बड़े थे सो देहलीको लाँघकर नीचे उतर गये, किन्तु छोटे सरकार उनकी देखादेखी चौखट पकड़कर नीचे उतरने लगे, पर छोटे होनेके कारण धरतीतक पैर न पहुँच पाये, अब ऊपर भी नहीं चढ़ सकते, इससे वहीं लटकने लगे और रोने लगे। इतनेमें ही कोई महात्मा उधर आ निकले और इस नजारेको देखकर गद्-गद होकर कहने लगे—

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः।
अहमिह नन्दं वन्दे यस्यालिन्दे परं ब्रह्म॥

(श्रीरघुपत्युपाध्यायस्य)

'संसारसे डरे हुए कोई चाहे श्रुतिको, चाहे कोई स्मृतिको और चाहे कोई भारतको भजा करे, पर हम तो इस नन्दबाबाको प्रणाम करते हैं, जिसकी चौखटपर परब्रह्म लटक रहा है।' जिस व्रजमें यह सुख है, यह भाव है, यह प्रेम है उसकी महिमाका क्या वर्णन हो सकता है? इसीलिये हजारों वर्ष व्यतीत हो जानेपर भी श्रीकृष्णकी इस लीलास्थलीके दर्शन करनेको, इसकी परम पावन रजमें लेटनेको, कहीं लुक छिप करके भी उस मोरमुकुटवालेकी झाँकीकी झलक दिखायी दे जाय इस आशाके पूर्ण करनेको दूर-दूर [illegible] लाखों यात्री व्रजमें आते रहते हैं और यहाँ आकर [illegible]रते हैं। कोई कोई घर बैठे ही दूसरोंसे

ब्रजदर्शनकी लालसाको तृप्त कर लेते हैं। परन्तु इतने बड़े ब्रजके समस्त तीर्थस्थलोंके दर्शनकी सुविधा समस्त यात्रियोंको नहीं हो सकता। इसी त्रुटिको दूर करनेके इस छोटे से निबन्धको लिखकर कल्याणपत्रमें प्रकाश करनेके लिये भेजा था और वह कल्याणके श्रीकृष्णाङ्कमें प्रकाशित हुआ था। उसीको पुनः उद्धृत परिष्कृत एवं परिवर्द्धित करके यह पुस्तकके आकारमें प्रकाश करके ब्रजभक्तोंकी सेवामें समर्पित किया है। ब्रजके यात्री इसके अनुसार ब्रजकी यात्रा अच्छी तरह कर सकेंगे। घर बैठे सज्जन भी इसके द्वारा ब्रज यात्राका सुख ध्यानसे प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी पूर्ण आशा है। जो सज्जन कृपा कर इसकी मनुष्य-स्वभावसुलभ त्रुटियोंको सूचित करेंगे, उनकी कृपाका धन्यवाद किया जायगा और आगामी संस्करणमें वे त्रुटियाँ सुधार दी जायँगी। [इस पुस्तकका समस्त मुद्रणाधिकार गीताप्रेस, गोरखपुरके अध्यक्ष महोदयको है।] अन्तमें श्रीब्रजराजसे प्रार्थना है कि यह 'वाक्य-कुसुमाञ्जलि' श्रीमहाराजके चरणोंमें समर्पित है, इससे लोगोंके चित्तमें भक्तिका उदय हो और उनका कल्याण हो।

इसके चौथे संस्करणमें पुनः संशोधन परिवर्तन कर दिया गया है।

श्रीविष्णुस्वामिसम्प्रदाय गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य—मथुरावासी



श्रीनन्दनन्दन

श्रीविष्णुस्वामिने नमः

व्रजकी झाँकी

व्रजाधिराजपादपद्मयुग्मशुभ्रमन्दिरे ।
मनोरमे मनो रमेत मे नखालिचन्दिरे ॥
भुवन विदित इहि जदपि चारु भारत-भुवि पावन ।
पै रसपूर्ण कमण्डल व्रजमण्डल मन भावन ॥

—स्व० कवि सत्यनारायण

व्रजमहिमा

भगवान् श्रीकृष्ण धन्य हैं, उनकी लीलाएँ धन्य हैं और इसी प्रकार यह भूमि भी धन्य है, जहाँ वे त्रिभुवनपति मानवरूपमें अवतरित हुए और परम पवित्र अनुपम अलौकिक लीलाएँ कीं, जिनकी एक-एक लीलाका अनुकरण भी भावुक हृदयोंको अलौकिक आनन्द दे[illegible] श्रीकृष्णको अन्तर्हित हुए आज पाँच



श्रीनन्दनन्दन

श्रीविष्णुस्वामिने नम

व्रजकी झाँकी

व्रजाधिराजपादपद्मयुग्मशुभ्रमन्दिरे ।
मनोरमे मनो रमेत मे नखालिचन्दिरे ॥
भुवन विदित इहि जदपि चारु भारत भुवि पावन ।
पै रसपूर्ण कमण्डल व्रजमण्डल मन-भावन ॥

—स्व० कवि सत्यनारायण

व्रजमहिमा

भगवान् श्रीकृष्ण धन्य हैं, उनकी लीलाएँ धन्य हैं और इसी प्रकार यह भूमि भी धन्य है, जहाँ वे त्रिभुवनपति मानवरूपमें अवतरित हुए और परम पवित्र अनुपम अलौकिक लीलाएँ की, जिनकी एक-एक झाँकीका अनुकरण भी भावुक हृदयोंको अलौकिक आनन्द दे[illegible] श्रीकृष्णको अवतरित हुए आज पाँच सहस्र

बरसे ऊपर हुए। उनके कीर्ति-गानके साथ-साथ उस भूखण्डकी भी महिमाका सदैव बखान किया जाता है। वहाँकी रजको मस्तकपर धारण करनेके लिये अनन्त शतश लोग तरसते हैं। बड़े बड़े लक्ष्मीके लाल अपने समस्त सुख-सौभाग्यको लात मार यहाँ आ बसे और ब्रजके टूक माँग-माँगकर उदर पोषण करनेमें ही अपने आपको धन्य समझा। यही नहीं, अनेक भक्त हृदय तो यहाँके टुकड़ोंके लिये तरसा करते हैं, भगवान्से इसके लिये प्रार्थना करते हैं। ओड़छेके व्यास गिड़गिड़ाकर कहते हैं—

ऐसो कब करिहो मन मेरो।
कर करवा हरवा गुंजनको, कुंजन माँहि बसेरो।
ब्रजबासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाछ महेरो॥
भूख लगै तब माँगि खाइहौं, गिनौं न साँझ-सवेरो।
ऐसी आस 'व्यास' की पूजौ मेरे गाँव न खेरो॥

यह क्या बात है? इस भूमिमें ऐसा कौन सा आकर्षण है जो अपनी ओर इच्छाके विरुद्ध भी आकर्षित कर लेता है? भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ जन्म धारण किया था और नाना प्रकारकी अलौकिक लीलाएँ की थीं, क्या इसीलिये भक्त हृदय इससे इतना प्रेम करते हैं? हाँ, अवश्य ही यह बात है, पर केवल यही बात नहीं है, इसके साथ-साथ सोनेमें सुगन्ध यह और भी है कि इस भूमिको भगवान् श्रीकृष्ण गोलोकसे यहाँ लाये थे। जैसे ब्रजमें देवा-देवता, ऋषि मुनि, श्रुतियाँ आदिने आकर गोप गोपिकाओंका जन्म ग्रहण किया था, उसी प्रकार ब्रज भूमि भी श्रीगोलोक धामसे

आयी थी, इस कारण इसकी महिमा विशेष है। पुराणोंके अनुसार यह भूमि सृष्टि और प्रलयकी व्यवस्थासे बाहर है। ऋग्वेदके विष्णुसूक्तमें एक ऋचा व्रजके सम्बन्धमें मिलती है, जो इस प्रकार है—

ता वा वास्तून्युश्मसि गमध्यै
यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः
परमं पदमवभाति भूरि इति॥

ता तानि वा युवयो रामकृष्णयोर्वास्तूनि रम्यस्थानानि गमध्यै गन्तुम् उश्मसि उष्मः कामयामहे न तु तत्र गन्तुं प्रभवामः। यत्र (वृन्दावनेषु) वास्तुषु भूरिशृङ्गा गावः अयासः सञ्चरन्ति अत्र भूर्लोके अह निश्चित तद् गोलोकाख्य परम पद भूरि अत्यन्त मुख्यम् उरुभिर्बहुभिर्गीयते स्तूयत इत्युरुगायस्तस्य वृष्णः वृष्णेर्यादवस्य पदमवभाति प्रकाशत इति।

अर्थात् इन्द्र स्तुति करते हैं कि "हे भगवन् श्रीबलराम और श्रीकृष्ण! आपके वे अति रमणीक स्थान हैं। उनमें हम जानेकी इच्छा करते हैं, पर जा नहीं सकते। कारण—

अहो मधुपुरी धन्या वैकुण्ठाच्च गरीयसी।
विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न तिष्ठति॥

'यह मधुपुरी धन्य और वैकुण्ठसे भी श्रेष्ठ है, क्योंकि वैकुण्ठमें तो मनुष्य अपने पुरुषार्थसे पहुँच सकता है, पर यहाँ श्रीकृष्णकी कृपाके बिना कोई एक क्षण भी नहीं ठहर सकता।' जहाँ (व्रजमें) बड़े

सींगोंवाली गायें चरती हैं। यदुकुलमें अवतार लेनेवाले, उरुगाय (बहुत प्रकारसे गाये जानेवाले) भगवान् श्रीकृष्णका गोलोक नामक वह परम पद (व्रज) निश्चित ही भूलोकमें प्रकाशित हो रहा है।" अब फिर बतलाइये, व्रजभूमिकी बराबरी कौन स्थान कर सकता है? भारतवर्षमें अनेक तीर्थस्थान हैं, सबका माहात्म्य है, भगवान्के और-और भी जन्मस्थान हैं, पर यहाँकी बात ही कुछ निराली है! आनन्द ही अनोखा है!! यहाँके नगर-ग्राम, मठ-मन्दिर, वन-उपवन, लता कुञ्ज आदिकी अनुपम शोभा भिन्न भिन्न ऋतुओंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे देखनेको मिलती है। अपनी जन्मभूमिसे सभीको प्रेम होता है, फिर वह चाहे खुला खँडहर हो अथवा सुरम्य स्थान, वह जन्मस्थान है, यह विचार ही उसके प्रति प्रेम होनेके लिये पर्याप्त है। इसीलिये भगवान्का भी इससे प्रेम होना स्वाभाविक है। इससे श्रीमागवतमें लिखा है 'मथुरा भगवान् यत्र नित्य सन्निहितो हरिः।' उस पुण्यभूमिकी रही-सही नैसर्गिक छटाके दर्शनके लिये—उस छटाके लिये जिसका एक झाँकी उस पवित्र युगका, उस जगद्गुरुका, उसकी लौकिकरूपमें की गयी अलौकिक लीलाओंका अद्भुत प्रकारसे स्मरण कराती, अनुभवका आनन्द देती और मलिन मन मन्दिरको सर्वथा स्वच्छ करनेमें सहायता प्रदान करती है—भावुक भक्त तरसा करते हैं, इसमें आश्चर्य ही क्या है? नैसर्गिक शोभा भी न होती, प्राचीन लीलाचिह्न भी न मिलते होते, तो भी केवल साक्षात् परब्रह्मका यहाँ विग्रह होनेके नाते ही यह स्थान आज हमारे लिये तीर्थ था, यह भूमि हमारे लिये तीर्थ थी, जहाँकी पावन रजको ब्रह्मज्ञ उद्धवने अपने मस्तकपर

धारण किया था, वे व्रजवासी भी दर्शनीय थे जिनके पूर्वजोंके भाग्यकी सराहना करते-करते भक्त सूरदासके शब्दोंमें बड़े-बड़े देवता आकर उनकी जूँठन खाते थे, क्योंकि उनके बीचमें भगवान् अवतरित हुए थे।

> व्रज-वासी-पटतर कोउ नाहीं।
> ब्रह्म, सनक, सिव, ध्यान न पावत,
> इनकी जूँठन लै लै खाहीं॥
> हलधर कह्यो, छाक जैवत सँग,
> मीठी लगत सराहत जाहीं।
> 'सूरदास' प्रभु जो विस्वम्भर,
> सो ग्वालनके कौर अघाहीं॥

तब फिर यहाँ तो अनन्त दर्शनीय स्थान हैं, अनन्त सुन्दर मठ मन्दिर, वन-उपवन, सर-सरोवर हैं, जो अपनी शोभाविशेषके लिये दर्शनीय हैं और पावनताके लिये भी दर्शनीय हैं। सबके साथ अपना अपना इतिहास है। यद्यपि मुसलमानोंके आक्रमण पर-आक्रमण होनेसे व्रजकी सम्पदा नष्टप्राय हो गयी, कई प्रसिद्ध स्थानोंके चिह्नतक मिट गये, मन्दिरोंके स्थानपर मसजिदें खड़ी हो गयीं, तथापि धर्मप्राणजनोंकी चेष्टासे कुछ स्थानोंकी रक्षा तथा जीर्णोद्धार होनेसे यहाँकी जो भी कुछ बची-खुची शोभा आज है, वह भी [illegible]र अलौकिक ही है।

व्रज-नामका कारण और स्थान-विस्तार

जिस स्थानमें पशु अधिक हों उसे व्रज कहते हैं। अथवा—'व्रजन्ति अस्मिन् जना श्रीकृष्णप्राप्त्यर्थमिति व्रज' अर्थात् इस प्रान्तमें श्रीकृष्णभगवान्से मिलनेके लिये जीव जाते हैं, इसलिये यह व्रज है। यह व्रजभूमि मथुरा और वृन्दावनके आस पास चौरासी कोसमें फैली हुई मानी जाती है। वाराहपुराण (म० म० १७ अ०) में इसका विस्तार अस्सी कोस माना गया है। जैसे कि—

विंशतिर्योजनानां च माथुरं मम मण्डलम्।
यत्र तत्र नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥*

अर्थात् मेरा मथुरा मण्डल बीस योजन (अस्सी कोस) है, जिसके यत्र-तत्र स्थित तीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पातकोंसे मुक्त हो जाता है। मथुराके चार कोसोंको मिलानेसे चौरासी कोस होते हैं। पैंड पैंडपर अश्वमेधका फल निश्चय प्राप्त होता है।

वन-उपवन

यहाँ बारह महावन और अनेक ... ... हैं—

महावन—१ मधु...
५ कामवन, ६ भदिर...
वन, १० बेलवन, १...

---

* पदे पदेऽश्वमे...

† वृन्दावन तीन ...
पास, ३ मथुरासे तीन ...
आगे आवेगा।
गिनतीमें आता है।

उपवन—१ गोकुल, २ गोवर्धन, ३ बरसाना, ४ नन्दगाँव, ५ सकेत, ६ परमनन्द, ७ अडींग, ८ शेषशायी, ९ माट, १० अक्षगाम, ११ खेलवन १२ श्रीकुण्ड, १३ गन्धर्ववन, १४ परसौली, १५ बिलछू, १६ वच्छवन, १७ आदिबद्री, १८ करहला, १९ आजनोखर, २० पिसायो, २१ कोकिलावन, २२ दधिवन, २३ कोटवन, २४ रावल, २५ सुरभीर (सुरीर), २६ मुञ्जाटवी आदि अनेक उपवन हैं।

सरिता

व्रजमण्डलमें पहले कई सरिताएँ थीं, पर अब यमुना, कृष्ण गङ्गा, मानसीगङ्गा और चरणगङ्गा—ये चार ही नदियाँ प्रकट हैं। सरस्वती प्रकट नहीं हैं। मथुरामें जहाँ पहले सरस्वती बहती थीं वहाँ अब सरस्वती-नाला नामसे स्थान प्रसिद्ध है और जहाँ सरस्वती यमुनाजीमें मिलती थीं, वहाँ सरस्वती-सङ्गम तीर्थ अब भी प्रसिद्ध है।

सरोवर

सरोवर पाँच हैं—मानसरोवर, हंसमरोवर, पानसरोवर, चन्द्रसरोवर और प्रेमसरोवर।

इसके सिवा मठ-मन्दिर, कुण्ड इत्यादि अगणित स्थान हैं।

पर्वत

पर्वत पाँच हैं—गोवर्धन, बरसानु, नन्दीश्वर, चरणपहाडी, दूसरी चरणपहाडी।

व्रज-नामका कारण और स्थान-विस्तार

जिस स्थानमें पशु अधिक हों उसे व्रज कहते हैं । अथवा—'व्रजन्ति अस्मिन् जना श्रीकृष्णप्राप्त्यर्थमिति व्रज' अर्थात् इस प्रान्तमें श्रीकृष्णभगवान्से मिलनेके लिये जीव जाते हैं, इसलिये यह व्रज है । यह व्रजभूमि मथुरा और वृन्दावनके आस पास चौरासी कोसमें फैली हुई मानी जाती है । वाराहपुराण (म० म० १७ अ०) में इसका विस्तार अस्सी कोस माना गया है । जैसे कि—

विंशतिर्योजनानां च माथुरं मम मण्डलम् ।
यत्र तत्र नरः स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥*

अर्थात् मेरा मथुरा मण्डल बीस योजन (अस्सी कोस) है, जिसके यत्र तत्र स्थित तीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पातकोंसे मुक्त हो जाता है । मथुराके चार कोसोंको मिलानेसे चौरासी कोस होते हैं । पैंड पैंडपर अश्वमेधका फल निश्चय प्राप्त होता है ।

वन उपवन

यहाँ बारह महावन और अनेक उपवन हैं जो इस प्रकार हैं—

महावन—१ मधुवन, २ तालवन, ३ कुमुदवन, ४ बहुलावन, ५ कामवन, ६ खदिरवन, ७ वृन्दावन,† ८ भद्रवन, ९ भाण्डीर-वन, १० बेलवन, ११ लोहवन, १२ महावन ।

---

* पदे पदेऽश्वमेधानां फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।—ऐसा भी पाठ है ।

† वृन्दावन तीन हैं—१ कामवनके आस पास, २ गोवर्धनके आस पास, ३ मथुरासे तीन कोसपर वर्तमानमें विद्यमान है । इसका विस्तार आगे आवेगा । वृन्दावनके भाग दो हैं । इससे यह बेलवनके पीछे भी गिनतीमें आता है ।

उपवन—१ गोकुल, २ गोवर्धन, ३ बरसाना, ४ नन्दगाँव, ५ सकेत, ६ परममन्द्र, ७ अड़ींग, ८ शेषशायी, ० माट १० अज्ञगाम, ११ खेलवन, १२ श्रीकुण्ड, १३ गन्धर्ववन, १४ परसौली, १५ बिल्छू, १६ बच्छवन, १७ आदिबद्री, १८ करहला, १९ आजनोखर, २० पिसायो, २१ कोकिलावन, २२ दधिवन, २३ कोटवन, २४ रावल, २५ सुरभीर (सुरीर), २६ मुञ्जाटवी आदि अनेक उपवन हैं।

सरिता

व्रजमण्डलमें पहले कई सरिताएँ थीं, पर अब यमुना, कृष्ण-गङ्गा, मानसीगङ्गा और चरणगङ्गा—ये चार ही नदियाँ प्रकट हैं। सरस्वती प्रकट नहीं हैं। मथुरामें जहाँ पहले सरस्वती बहती थीं वहाँ अब सरस्वती नाला नामसे स्थान प्रसिद्ध है और जहाँ सरस्वती यमुनाजीमें मिलती थीं, वहाँ सरस्वती-सङ्गम तीर्थ अब भी प्रसिद्ध है।

सरोवर

सरोवर पाँच हैं—मानसरोवर, हससरोवर, पानसरोवर, चन्द्रसरोवर और प्रेमसरोवर।

इनके सिवा मठ-मन्दिर, कुण्ड इत्यादि अगणित स्थान हैं।

पर्वत

पर्वत पाँच हैं—गोवर्धन, बरसानु, नन्दीश्वर, चरणपहाड़ी, दूसरी चरणपहाड़ी।

मथुरा

मथुराकी ऐतिहासिकता

जहाँ आजकल मथुरा है वहाँ पहले न था, इस समय जहाँ मल्लपुरा या केशवदेवजीका मन्दिर है वहाँ बसती थी। व्रजमें प्राचीन वस्तुएँ तीन ही हैं। पर्वत, नदी और भूमि। प्राचीन वस्तुए या तो नष्ट हो गयीं या नष्ट कर दी गयीं और उनके स्थान पर नयी बन गयीं या पुरानीका जीर्णोद्धार हो गया। सारांश यह है कि *प्राचीनता नष्ट होकर नवीनताका निराला नाच निखर* आया। यही बात मथुराके सम्बन्धमें भी है। मथुरापर हूण, शक बौद्ध, जैन, मुसलमान आदि सबका हमला और आधिपत्य होता रहा है एवं अपने-अपने आधिपत्यमें सबोंने पुरानी शोभा नष्ट की और अपनी नयी कीर्ति स्थापित की, इस प्रकार प्राचीनता भङ्ग होती चली गयी। धर्मान्ध म्लेच्छोंने तीन बार इसमें कत्ले-आम भी किया, क्योंकि उनके यहाँ काफिरोंको मारना सबाब है और मथुरा-सदृश पुण्यतम तीर्थके काफिरोंका कत्ल करना उन्होंने बहिश्त पहुँचानेको काफी समझा था। उस कत्ले-आमको कताके नामसे अब भी मथुरावासी याद कर लेते हैं। यहाँपर राज्य भी बदल बदलकर कई हुए—पेशवा, सेंधिया, जैपुर, होलकर, भरतपुर आदि। इस प्रकार मथुरा जैसे तीर्थरूपसे विलक्षण है, वैसे यह अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी विशेष रखती है। इसके टीलोंमें खँडहरोंमें, भूमिमें, कुओंमें, यमुनामें बड़ी बड़ी महत्त्वकी ऐतिहासिक वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं, जो यहाँके 'प्राचीन-वस्तु-सग्रहालय' (म्यू

जियम) म रक्खी हुई हैं । कुछ बाहर भी चली गया है । सन् १०१७ ई० में महमूद गजनवीने बीस दिनतक मथुरा और उसके आस-पासके वृन्दावन आदिको खूब ही नष्ट-भ्रष्ट किया । फिर सन् १५०० ई० में सुल्तान सिकन्दर लोदीने मथुराका सर्वनाश किया । सन् १६६० ई० में औरङ्गजेबने मथुरा और व्रजका नाश किया । सन् १७५७ ई० में अहमदशाह अब्दालीने होलीके त्यौहारपर नाच रंगमें इकट्ठे हुए मथुराके और उसके आसपासके स्त्री, पुरुष, बालक, बुड्ढोंका संहार किया । इस प्रकार 'मथुरा' सर्वदा दूसरोंके आक्रमण ही सहती चली आयी है ।

अस्तु, सन् १८०३ ई० में यहाँ अंग्रेजी राज्य स्थापित हुआ ।

स्थान-परिचय

हिन्दू धर्म-ग्रन्थोंमें मथुराकी बडी महिमा है । अथर्ववेदकी गोपालतापिनीमें लिखा है—

मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्मज्ञानेन येन वा ।
तत्सारभूतं यद्यस्यां मथुरा सा निगद्यते ॥

अर्थात् जिस ब्रह्मज्ञान एवं भक्तियोगसे सारा जगत् मथा जाता है यानी ज्ञानी और भक्तोंका संसार लय हो जाता है, वह सारभूत ज्ञान और भक्ति जिसमें सदा विद्यमान रहते हैं, वह 'मथुरा' कहलाती है ।

पद्मपुराणमें भगवान्‌का वचन है—

अहो न जानन्ति नरा दुराशया
पुरीं मदीयां परमां सनातनीम्

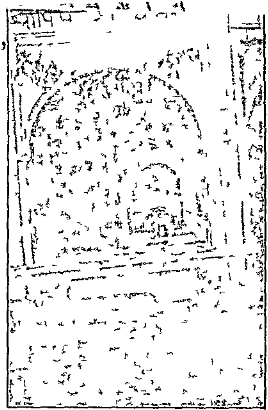
सुरेन्द्रनागेन्द्रमुनीन्द्रसंस्तुतां
मनोरमां तां मधुरां पराकृतिम् ॥

—इत्यादि

अर्थात् 'दुष्ट-हृदयके लोग मेरी इस परम सुन्दर सनातन मथुरा-नगरीको नहीं जानते, जिसकी सुरेन्द्र, नागेन्द्र तथा मुनीन्द्रोंने स्तुति की है और जो मेरा ही स्वरूप है।' मथुरा आदि-वाराह भूतेश्वर-क्षेत्र कहलाती है। मथुराके चारों ओर चार शिवमन्दिर हैं—पश्चिममें भूतेश्वरका, पूर्वमें पिप्पलेश्वरका, दक्षिणमें रंगेश्वर-का और उत्तरमें गोकर्णेश्वरका। चारों दिशाओंमें स्थित होनेके कारण शिवजीको मथुराका कोतवाल कहते हैं। मानिक चौकमें नील-वाराह और श्वेत-वाराहके सुन्दर विशाल मन्दिर हैं। श्रीकृष्णके प्रपौत्र व्रजनाभने श्रीकेशवदेवजीकी मूर्ति स्थापित की थी, पर औरंगजेबके कालमें वह राज धाममें पधरा दी गयी। औरंगजेबने मन्दिरको तोड़ डाला और उसके स्थानमें मसजिद खड़ी कर दी। बादमें उस मसजिदके पीछे दूसरा केशवदेवजीका मन्दिर बन गया है। प्राचीन केशव-मन्दिरके स्थानको 'केशव-कटरा' कहते हैं। खुदाई होनेसे यहाँपर बहुत-सी ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं। मन्दिरके पास दक्षिणकी ओर पोतरा-कुण्ड है, जो देखनेमें बहुत सुन्दर तो नहीं, पर बहुत विशाल है। इसमें भीतर इतने बड़े-बड़े दालान हैं, जिनमें हजारों मनुष्य बैठ सकते हैं और कुण्डके बाहरसे कुछ मालूम भी न हो। इसमें जल प्राय सूख जाया करता है। इसीके पास वर्तमान कृष्ण-जन्मभूमिका मन्दिर है (वास्तविक कृष्ण-जन्म-

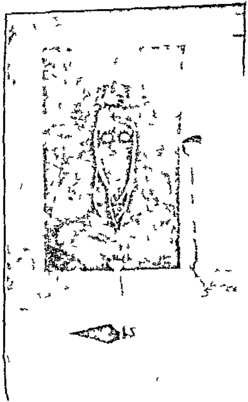


श्रीभूतेश्वरनाथ (मथुरा)   पृ० २२





श्रीरङ्गेश्वरनाथ महादेव (मथुरा)   पृ० २२



भूमिके स्थानपर तो औरंगजेबकी मसजिद है), जिसमें देवकी वसुदेवजीकी मूर्तियाँ हैं । उक्त स्थानको मल्लपुरा भी कहते हैं । इसी स्थानमें कंसके चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल, तोशल आदि प्रसिद्ध मल्ल रहा करते थे । यहाँ एक पुराना गङ्गाजीका मन्दिर भी है और इस प्रान्तमें भूतेश्वर महादेवजीके पास कङ्काली-टीलेपर कङ्काली-देवी (कंसकाली) का मन्दिर है । कङ्काली-टीलेमें भी खोदनेसे अनेक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं । यह कङ्काली वह बतायी जाती है, जिसे देवकीकी कन्या समझकर कंसने मारना चाहा था, पर जो उसके हाथसे छूटकर आकाशमें चली गयी थी । इससे आगे बलभद्रकुण्ड है और बलभद्र तथा जगन्नाथजीका मन्दिर है । इस ओरके कुओंका जल बड़ा स्वास्थ्यकर है । यहाँके कुओंसे नलद्वारा शहरको जल दिया जाता है ।

और भी बहुत-से नवीन मन्दिर हैं । ये सब नगरके बाहर हैं । सबसे श्रेष्ठ, सुन्दर, सेवा-शृङ्गारका जहाँ अच्छा आनन्द रहता है, वह **श्रीद्वारकाधीशका** मन्दिर है । यह सेठ गोकुलदास पारखजीका बनवाया हुआ है, जो कि ग्वालियर-राज्यके खजाची थे और कई करोड़की सम्पत्तिके मालिक थे । यह मन्दिर तृतीय पीठाधिपति काँकरोलीके गोस्वामियोंके सुपुर्द है । इसके खर्चके लिये बहुत-से गाँव लगे हुए हैं और भेंट भी बहुत आती है । इसमें उत्सव बहुत होते हैं और नित्य साधु प्रसाद पाते हैं । अन्नकूटके अवसरपर हजारों ब्राह्मण और अन्य सेवकजन प्रसाद पाते हैं और सालभरमें एक बार मथुराकी विद्वन्मण्डली भी यहाँ प्रसाद प [illegible] प्रातःकाल शृङ्गारके पीछे माखन[illegible]

मिश्री और रात्रिको शयनके पीछे मोहनभोगका प्रसाद सब दर्शनियोंको बाँटा जाता है। इस मन्दिरमें संस्कृत-पाठशाला भी है। इसमें आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक दो चिकित्सालय भी है। श्रीमद्भागवतकी कथा भी जिस दिनसे भगवान् विराजे हैं, उसी दिनसे नित्य प्रातःकाल होती है। रात्रिमें चार मनुष्य नाम कीर्तन करते हैं। शयनके समय प्रतिदिन बहुत-से साधु नाम कीर्तन करते हैं। शयनके अनन्तर श्रीमद्भागवतका पाठ भी नित्य होता है। इस प्रकार अहर्निश हरिस्मरण ही होता रहता है। प्रबन्ध-व्यवस्था भी बहुत सुन्दर है। यह मन्दिर सं० १८७० वि० में बना था। वास्तवमें यह मथुराकी शोभा है। श्रीद्वारकाधीशजीका चतुर्भुजी बड़ी ही अद्भुत झाँकी है। यहाँका शृङ्गार और पूजा-पद्धति बड़ी ही अलौकिक है। श्रीवल्लभ-सम्प्रदायके अनुसार यहाँकी सेवा-पूजा है। भगवान्‌के केवल भोग-रागके समय ही दर्शन होते हैं, और मन्दिरोंकी भाँति सदा खुले नहीं रहते।

श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर—यह रामगढ़निवासी सेठ गुरु-सहायमलजी पोद्दारका बनवाया हुआ है। इसमें भी उत्सव बहुत अच्छे होते हैं और भगवान्‌की मूर्ति बड़ी सुन्दर है। विद्यार्थी और साधु प्रतिदिन भोजन करते हैं। इसमें भी एक सुन्दर संस्कृत पाठशाला है और अभ्यागतोंको चने भी बटते हैं।

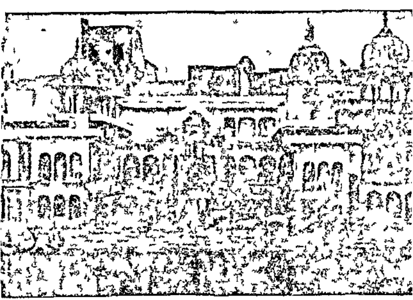
श्रीकिशोरीरमणजीका *मन्दिर—स्वर्गीय किशोरीलालजी ढूँसरका* बनवाया हुआ है। इसके आधिपत्यमें किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल है, जो बहुत उन्नत दशामें है। इस मन्दिरमें भी

उत्सव बहुत ही सुन्दर होते हैं। इसमें सोने-चाँदीका बना हुआ हिंडोला बहुत विचित्र है। इसमें भी विद्यार्थी, साधु नित्य भोजन करते हैं, कथा और कीर्तन होते हैं।

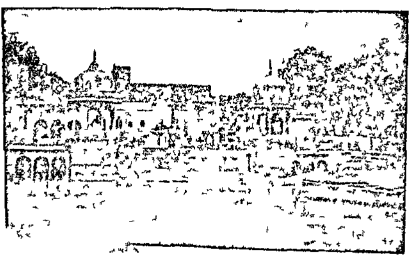
गोवर्धननाथजीका* मन्दिर—इसमें पत्थरका काम बहुत ही सुन्दर है, जिसके फोटो लेनेको यूरोपियन आया करते हैं। उदयपुरवाली रानीका मदनमोहनजीका मन्दिर—इसका भी प्रबन्ध अच्छा है। अभ्यागतोंको भोजन और चने मिलते हैं। बिहारीजीका मन्दिर—इसे मऊके एक सेठने बनवाया है। आजकल यह मन्दिर श्रीनाथजीकी भेंट है। इसमें श्रीनाथ भण्डार स्थापित है। मदनमोहनजीका मन्दिर—यह रामगढ़के रहनेवाले अनन्तराम सेठका बनवाया हुआ है। बड़ा विशाल है। राधेश्यामजीका मन्दिर—यह उलाववाली रानी श्यामकुँवरिका बनवाया हुआ है। असकुण्डाघाटपर हनुमान्‌जी, नृसिंहजी, वाराहजी, गणेशजीके मन्दिर हैं। इससे उत्तरको तरफ प्राचीन विश्रामघाट था। मुसलमानी समयमें वह भ्रष्ट कर दिया गया और एक मखदूम साहबने मसजिद बना दी। इससे आगे राजा भरतपुरकी हवेली है जिसका फाटक व दरवाजा बहुत ही सुन्दर है। इससे आगे सेठ लक्ष्मीचन्दजीकी हवेली है। इसके सामने श्रीद्वारकाधीशजीका

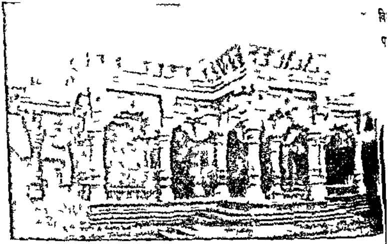
* ये पाँच मन्दिर स्वामीघाटपर हैं। इसका दूसरा नाम वसुदेवघाट भी है। सुनते हैं इसी रास्तेसे वसुदेवजी श्रीकृष्णको मथुरासे गोकुल ले गये थे। यह मथुराके सामने ही है इससे इसको सामुद्रघाट भी मजमाघाम कहा [illegible] एक यमुना-मन्दिर है, जिसकी दशा अच्छी नहीं है,

पूर्वोक्त मन्दिर है और इसीके बराबर गलीमें मानिकचौकमें वाराहजीके दो मन्दिर हैं। द्वारकाधीशके मन्दिरसे आगे राधा कान्तजीका मन्दिर है। यह निम्बार्कसम्प्रदायका है। हथुआ नरेशके गुरु इसके महन्त हैं। उससे आगे श्रीमहाप्रभुजीकी बैठक है। उससे आगे विश्राम या विश्रान्तघाट है। मथुरामें यही प्रधान तीर्थ है। नित्य प्रातःकाल और सायंकाल यहाँ श्रीयमुना जीकी आरती हुआ करती है। अच्छी शोभा होती है। श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कंसको मारकर यहाँ विश्राम लिया था इसलिये इसका विश्रामघाट नाम हुआ या सांसारिक पथिकको विश्रान्ति मिलती है इससे विश्राम या विश्रान्तघाट नाम बना है। इस जगह रतियावाले महाराज इक्यासी मन सोनेसे तुले थे और यह सोना व्रजमें बँटा था। तीन मन सोनेसे काशीके महाराज भी तुले थे। इस प्रकार सुवर्णकी ये दो बड़ी तुलाएँ हो चुकी हैं। जयपुर न रेशोंने महाराजोंकी तुलाएँ भी हैं और वे तुलाएँ यहाँ बनी हुई भी हैं। विश्रामघाटपर कृष्णबलदेवजी, राधादामोदरजी, मुरलीमनोहरजी, लक्ष्मीनारायण, अन्नपूर्णा, विश्वनाथ, हनुमान्, धर्मराज, गोवर्द्धननाथ आदिके कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं। यहाँपर चैत्र शुक्ला षष्ठीको यमुना-जीके जन्मदिन, फूलडोलका बहुत उत्तम मेला होता है। यह विश्रान्तसे आगे सभी घाटोंपर होता है। दूसरा मेला यमद्वितीया को होता है। तीसरा कार्तिक शुक्ला दशमीको होता है, जब श्रीराम कृष्ण कंसको मारकर अपने सखाओंके वर्गके साथ विश्रान्त पर पधारते हैं। मथुरामें दो श्मशान हैं। एक दक्षिणमें ध्रुवक्षेत्रपर, दूसरा उत्तरमें दशाश्वमेधपर। ध्रुवक्षेत्रपर जानेवाले शवों (मुर्दों) का

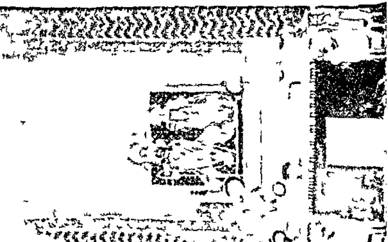


विश्रामघाट (मथुरा) पृ० २६





श्रीद्वारकाधीशजीका मन्दिर (मथुरा)



विश्राम और विश्रामस्थानिक पिण्डदान विश्रामघाटपर, दशाश्वमेध-पर जानेवालोंका चक्रतीर्थपर होता है ।

विश्रान्तसे पीछे बाजारमें गतश्रमनारायणजीका मन्दिर है । यह प्राणनाथजी शास्त्रीका बनवाया हुआ श्रीरामानुजसम्प्रदायका है । इसके व्यय-निर्वाहार्थ गाँव लगे हुए हैं । उससे पीछे पुराना गतश्रमनारायणका मन्दिर भी है । यहाँ गोपालजीका भी प्राचीन मन्दिर है । उससे आगे कंसखार है । यहाँ सब्जीमण्डी है और पण्डित क्षेत्रपाल शर्माका बनवाया हुआ घटाघर है । इससे आगे सतघरा मुहल्ला है जिसमें पहले श्रीवल्लभाचार्यके सातों स्वरूप विराजते थे ।

पालीवाल बोहराके बनवाये हुए मथुरानाथ, राधाकृष्ण, दाऊजी, विजयगोविन्द, गोवर्धननाथ आदिके मन्दिर हैं । रामजी द्वारेमें श्रीरामजीका मन्दिर है । वहीं श्रीगोपालजीकी अष्टभुजी मूर्ति है, जिसमें चौबीस अवतारोंकी मूर्तियोंके दर्शन होते हैं । रामनवमीके दिन यहाँ बहुत बड़ा मेला होता है । इसीके पास कीलमठकी गलीमें स्वामी कीलजी महाराजकी गुफा है । ये बड़े पहुँचे हुए महात्मा हो गये हैं । इन्होंने अपने तपोबलसे [illegible] की मुसलमानोंसे रक्षा की थी । इनका वेणीमाधव[illegible] (श्रीरामानुजसम्प्रदायका) है जो प्रयाग-घाटपर है । [illegible] चौतरापर तुलसीजीका थामला है और [illegible] है । गोवर्धनसे आकर प्रथम रात्रिमें श्रीनाथजी यहीं [illegible] अब मेवाड़में विराज रहे हैं । आगे चउवा[illegible] का मन्दिर है, जो राजा पटनीमलजीने [illegible]

मन्दिर है जिन्होंने स्वणासुरको मारकर मथुराकी रक्षा की इसके पास श्रीगोपालजीका मन्दिर है जो [illegible] सम्प्रदायका है। होली दरवाजेके पास कंसनिकन्दनका है। ये प्रभु भी वज्रनाभके पधराये हैं।

इससे आगे चलकर दाऊजीका मन्दिर है। महोलीकी पौर पद्मनाभजीका मन्दिर है। ये भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। डोरीबाजारमें गोवर्धननाथजीका मन्दिर है। इसमें भी अभ्यागत भो करते हैं। घीयामण्डीमें सीतारामजी और जानकीजीवनजीके मन्दिर हैं, इनमें भी अच्छे उत्सव होते हैं। ये दोनों मन्दिर ईसरोंके बनवाये हुए हैं। आगे चलकर दीर्घविष्णुजीका मन्दिर है। यह भी पटनीमलजीका बनवाया हुआ है। वाराहपुराणमें मथुराके जिन मन्दिरोंका वर्णन है और कालवश वे नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं उनमेंसे कितनोंहीको राजा पटनीमलने बनवाया था जैसा कि वीरभद्रेश्वर मन्दिरकी प्रशस्तिमें लिखा है—

सुविश्रुत यद्वपु पुराणे
श्रीवीरभद्रेश्वरमन्दिर यत्।
अदृश्यता कालवशादवाप्त
राज्ञा नव तत्पटनीमलेन ॥
निर्माय धर्मज्ञवरेण भूय
कृता प्रतिष्ठा विधिपूर्वक हि।
वाणाङ्गनागेन्दु(१८६५)मिते च वर्षे
वैशाखशुक्लत्रिकु(१३)सत्यतिथ्याम् ॥

सीतलापाइसामें मथुरादेवी और गजापाइसेमें दाऊजीके एक चरणका चिह्न है। रामदासकी मण्डीमें मथुरानाथ भगवान् और मथुरानाथ महादेवके मन्दिर हैं। बहुत प्राचीन हैं। बंगालीघाटपर श्रीवल्लभाचार्य-कुलके गोस्वामियोंके बड़े मदनमोहनजी, छोटे मदनमोहनजी, दाऊजी, गोकुलेशजीके मन्दिर हैं। नगरके बाहर ध्रुव टीलेपर ध्रुवजीका मन्दिर है। बालक ध्रुवजीने पाँच वर्षकी अवस्थामें छः महीनेतक यहीं कठिन तप करके भगवान्‌को प्रसन्न किया था। यहींपर ध्रुवजीके चरणचिह्न हैं। पहले यहाँ केवल चरण-चिह्न और श्रीनिम्बाकाचार्यके पूज्य श्रीसर्वेश्वर और विश्वेश्वर श्रीशालग्राम भी थे जो घटनावश अब सलेमाँबादमें और छत्तीसगढ़-में विराजते हैं। ध्रुवजीकी मूर्ति गोस्वामी श्रीलड़ैतीलालजीकी पधरायी हुई है। ये चरणचिह्न वज्रनाभके स्थापन किये हुए हैं। इसी स्थानपर निम्बार्कसम्प्रदायके जगत्प्रसिद्ध श्रीकेशवकाश्मीरीजी विराजते थे। यह स्थान निम्बार्कसम्प्रदायका है। केशवकाश्मीरी जी भी बड़े विद्वान् और तपस्वी थे। इन्होंने भी मुसलमानोंसे हिन्दुओंकी रक्षा की थी। सप्तर्षिके टीलेपर अरुन्धतीसहित सप्तर्षियोंके दर्शन हैं। यह स्थान विष्णुस्वामिसम्प्रदायके विरक्तोंका है। गऊघाटपर विष्णुस्वामिसम्प्रदायका श्रीराधाविहारीजीका मन्दिर है। वैरागपुरामें विष्णुस्वामिसम्प्रदायके विरक्तोंके दो मन्दिर हैं। इनमेंसे एक नारायणदासजीका स्थल है जिसके कुएँका जल नजर (दृष्टिदोष) का निवारक है। इससे आगे मथुरासे पश्चिममें महाविद्यादेवीका मन्दिर है जो कि बहुत ऊँचे टीलेपर है। इसके नीचे आस-पास बड़ा भारी जंगल था, जो सम्वत् १९५६ वि०

है। रंगेश्वर महादेव, सप्तसमुद्रकूप, शिवताल*, बलभद्रकुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतराकुण्ड, ज्ञानवापी (इसपर मुसल्मान कब्जा करते जाते हैं, हिन्दुओंको और हिन्दूसभाको इधर ध्यान देना चाहिये।), जन्मभूमि, केशवदेवमन्दिर, कृष्णकूप कुब्जाकूप महाविद्या सरस्वतीनाला, सरस्वतीकुण्ड, सरस्वतीमन्दिर चामुण्डा, उत्तरकोटितीर्थ, गणेशतीर्थ, गोकर्णेश्वर महादेव, गौतमऋषिकी समाधि, सेनापतिका घाट, सरस्वतीसंगम, दशाश्वमेधघाट, अम्बरीषका टीला, चक्रतीर्थ, कृष्णगङ्गा, कालिञ्जर महादेव, सोमतीर्थ, गौघाट, घण्टाकर्ण, मुक्तितीर्थ, कंसकिला, ब्रह्मघाट, वैकुण्ठघाट, धारापतन, वसुदेवघाट†, असिकुण्डा, वाराहक्षेत्र, द्वारकाधीशका मन्दिर, मणिकर्णिकाघाट, महाप्रभुजीकी बैठक, विश्रामघाट—ये मथुराके परिक्रमाके स्थान हैं। दूर होनेके कारण अब इनमेंसे उत्तर दक्षिणके बहुत से स्थान परिक्रमामें छोड़ देते हैं। बस, मथुरामें बड़े-बड़े दर्शनीय मन्दिर और स्थान ये ही हैं और छोटे-छोटे तो बहुत हैं।

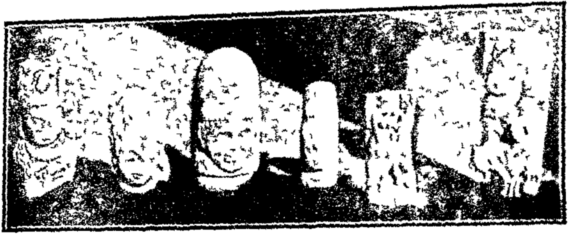
प्रकीर्णक

म्यूजियम—यह भी मथुरामें विचित्र स्थान है। इसमें ऐतिहासिक मूर्ति आदि वस्तुओंका अच्छा संग्रह है। यहाँ गायत्रीटीलेमेंसे मिला हुआ एक पत्थर है जिसमें शेषजी, यमुनाजी और श्रीकृष्णको लिये हुए वसुदेवजी दिखाये गये हैं। उसमें मत्स्य, कच्छप मगर भी बड़ी सुन्दरताके साथ दिखाये गये हैं। अबतक इसके सम्बन्धमें

* शिवताल भी राजा पटनीमल्लका बनवाया हुआ है। पहले यह एक साधारण कुण्ड था। अब बहुत विशाल, पाषाणका बना हुआ है।

† इसको ही सामीघाट कहते हैं।





मथुराके संग्रहालयकी कुछ सुन्दर मूर्तियाँ

यह निश्चय हुआ है कि यह मूर्ति ईसासे दो सौ वर्ष पहलेकी है। केशवदेवजीके कटरेके पास शिवाश्रम है, इसमें वेधशाला है जिसमें मर्कटीयन्त्र, पलभायन्त्र आदिक खगोलसे सम्बन्ध रखनेवाले कई उत्तम यन्त्र हैं। यह विद्याकलानिधि ज्योतिर्विद् शिवप्रकाशलालजी द्विवेदीका निर्माण किया हुआ स्थान है। दर्शनीय है।

शिक्षा विभाग

मथुरामें दो कालेज और दो हाई स्कूल हैं—१ किशोरीरमण-कालेज, २ चम्पा अग्रवाल कालेज, ३ गवर्नमेण्ट हाई स्कूल, ४ मिशन हाई स्कूल, एक हिन्दी मिडिल स्कूल भी है। पहले जो मन्दिरोंके क्रमसे संस्कृत-पाठशाला लिख आये हैं उनके अतिरिक्त स्वर्गवासी स्वनामधन्य चौबे वैजनाथजी इटावानिवासीने शहरसे बाहर डेम्पीयर-नगरमें माथुरचतुर्वेद-विद्यालय स्थापित किया है। इसमें हिन्दी-अंग्रेजी शिक्षाके अतिरिक्त संस्कृतकी उत्तमा परीक्षातककी शिक्षा दी जाती है। स्वर्गीय राजा सेठ लक्ष्मणदासजी C I, E सी० आई० ई० के मुनीम रायबहादुर मगीलालजीके ज्येष्ठ पुत्र प्रसिद्ध सेठ नारायण-दासजीके द्रव्यसे बनी हुई एक नारायणदास-धर्मशाला है, जो मथुरासे कुछ दूर वृन्दावनकी सड़कपर है। इसमें भी एक संस्कृत-पाठशाला है, जिसमें काशीकी परीक्षाओंकी पढ़ाई होती है। यहाँ एक पुस्तकालय भी है। इसमें रामानुजीय वैष्णवोंके ठहरने तथा भोजनादिका प्रबन्ध है और अभ्यागतोंको भी चने मिलते हैं। कुशक मुहल्लेमें मारवाडी संस्कृत पाठशाला है। इसमें अनुमान तीस विद्यार्थी रहते हैं, भोजन करते हैं और पढ़ते हैं। कुछ साधु भी भोजन

धर्मशालाएँ

मथुरासे बाहर वृन्दावन-दरवाजेसे आगे चलकर बाबू कल्याणसिंहजी भार्गवकी बनवायी हुई बड़ी सुन्दर पक्की सगीन धर्मशाला है। इसमें उच्चश्रेणी और निम्नश्रेणीके यात्रियोंके ठहरनेका पृथक् पृथक् प्रबन्ध है, परन्तु शहरसे दूर होनेके कारण उच्चश्रेणीके यात्री कम ठहरते हैं। इस धर्मशालाके पास नृसिंहकुण्ड एक तप स्थल है, यहाँ नरहरि नामसे एक पहुँचे हुए महात्मा हो गये हैं। इन्होंने चार सौ वर्षके होकर अपना शरीर त्याग किया था। माहेश्वरियोंकी धर्मशाला वृन्दावन दरवाजेपर है, इसमें बरातें अधिक ठहरती हैं। हाथरसवालोंकी धर्मशाला, कलकत्तावालोंकी धर्मशाला, सिन्धी धर्मशाला, बीकानेरियोंकी धर्मशाला, लुहाड़ोंकी धर्मशाला, माटियोंकी धर्मशाला, पञ्जाबियोंकी धर्मशाला आदि सौसे ऊपर धर्मशालाएँ हैं। पर इनमें हाथरसवालों की और कलकत्तावालोंकी धर्मशालाएँ सच्ची धर्मशालाएँ हैं, क्योंकि इनमें सब देशोंके और सब जातियोंके उच्च वर्णके सज्जन ठहर सकते हैं। औरोंमें जिन देशवालोंने बनवायी हैं उन्हीं देशोंके मनुष्य ठहर सकते हैं। इनसे भी उच्च एक धर्मशाला और है जो महाराजा अवागढ़की बनवायी हुई है। इसमें हर एक हिन्दू अपनी इच्छाके अनुसार चाहे जितने दिन ठहर सकता है।

दरवाजे

मथुरामें चार दरवाजे हैं। १—भरतपुर दरवाजा, २—डीग-दरवाजा, ३—वृन्दावन दरवाजा, ४—होली-दरवाजा। तीन दरवाजे तो केवल नाममात्रके हैं। इनमें दरवाजे नहीं हैं। होली दरवाजा बड़ा सुन्दर और विशाल पत्थरका बना हुआ है। फाटक इसमें भी

नहीं हैं। इसमें घण्टाघर है। इसे हार्डिंग कलक्टरने बनवाया था, इसीलिये इसे हार्डिंग-गेट भी कहते हैं।

अन्यान्य स्थान

होली दरवाजेके पास कुछ आगे चलकर रंगेश्वर महादेवका मंदिर है, उसके सामने कुछ आगे चलकर गवर्नमेण्ट हास्पिटल (अस्पताल) है, जिसके दरवाजे और कुछ इमारतके लिये श्रीनाथ-जीके टीकायत गोस्वामीजीने पचास हजार रुपये दिये थे। किन्तु मथुराकी धार्मिक जनताके लिये यहाँ एक बड़े धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालयकी विशेष आवश्यकता है। दो बैंकें हैं—एक इलाहाबाद-बैंक, दूसरी इम्पीरियलबैंक। यहाँ सरकारी गोरों और कालोंकी फौज भी सदा रहा करती है। यमुनासे पार जानेके लिये पहले नावोंका पुल था, फिर लोहेके पीपोंका, उसके बाद फिर पक्का पुल बन गया है, जो अब कई सालसे फ्री (बे-टिकट) हो गया है। चार रेलवे-स्टेशन हैं—१ मथुराकैण्टोमेण्ट, २ मथुराजंक्शन, ३ मसानी (मथुरा सिटी), ४ भूतेश्वर। यहाँपर सरकारी कचहरियाँ भी कई हैं—कलक्टरी, तहसील, दो मुंसिफी और दो जजी। कचहरियोंके पास डिस्ट्रिक्टबोर्ड और गङ्गा-नहर, यमुना-नहरोंके दफ्तर हैं। म्यूनिसिपिल्टी भी है, जिसमें चार मुसलमान-मेम्बरों, एक चौबे मेम्बर और दो सरकारी मेम्बरोंके स्थान संरक्षित (रिजर्व) हैं, शेष नौ मेम्बर पब्लिककी ओरसे चुने हुए हैं। इस कमेटीके द्वारा नगरकी सफाई, बिजलीकी रोशनी, नलका जल और स्वास्थ्यका प्रबन्ध होता है जो साधारणतः अच्छा है। जबसे अनिवार्य शिक्षा हुई है, तबसे म्यूनिसिपिल्टीने लोअर और अपर प्राइमरी

मदरसे बहुत बढ़ा दिये हैं और टाउनस्कूल भी इसीके प्रबन्धमें हैं। अन्त्यजोंके लिये अलग पाठशाला है। कई कन्या पाठशालाएँ हैं। एक पटवारियोंका स्कूल भी है, पर यह म्युनिसिपिल्टीके अधीन नहीं है।

व्यापार

यहाँके पेड़े, खुरचन, सूतकी निवाड़ और डोर, ताँबेके कलए, ठाकुरजीके सलमा सितारे और सोने चाँदीके मुकुट, किरीट आदि शृंगार, चन्दन और हाथीदाँतके चँवर, पंखे आदि बहुत अच्छे बनते हैं। अब कपड़ोंकी सुन्दर छपाईका काम भी बहुत होने लगा है।

विद्वान्

पहले यहाँ एक-एक, दो-दो शास्त्रोंके पूर्ण ज्ञाता गणनायोग्य विद्वान् बहुत थे। यहाँके ही शिष्य दयानन्द सरस्वती थे। अब यह बात नहीं रही। पर अब भी व्याकरण, साहित्य-गणित (नव्य और प्राचीन दोनों) वैद्यक, श्रीमद्भागवत, मन्त्रशास्त्र, धर्म शास्त्र, कर्मकाण्ड आदिके उत्तम विद्वान् समयानुसार विद्यमान हैं और प्रतिवर्ष परीक्षोत्तीर्णोंसे इनकी संख्या बढ़ती जाती है। मथुरा यमुनाजीके किनारेपर बसती है। परलीपारसे खड़े होकर देखनेसे अथवा रेलमें बैठे देखनेसे बड़ी शोभा दीखती है। पर अब घाटोंपरसे यमुनाके हट जानेसे और बीच-बीचमें रेती पड़ जानेसे बड़ा बुरा दृश्य दीखता है। अस्तु।

यात्रावर्णन

मधुवन

(महोलीगाँव)—यह गाँव मथुरासे दक्षिण पश्चिम
या पाँच मीलकी दूरीपर है। यहाँ श्रीरामचन्द्रजीके
मधु दैत्यके किलेको नष्ट कर तथा वनको उजाड़कर
को मारकर मधुपुरी बसायी थी। पीछे यही मथुरा
मथुरा अनादिकालसे थी, पर मधु दैत्य और उस
उसको उजाड़कर अपनी राक्षस तथा दैत्य प्रजा
था और सबका नाम मधुवन रख छोड़ा था।
भेद है कि मथुरा सदासे यमुना-तटपर बसती
कुछ मील दूर है। सम्भव है कि प्राचीन
वन—सब मिलाकर इतने फेरमें रहे
है—पहले मथुराको भी मधुरा कहते
मधुपुरी एकके ही नाम हैं। मधुवन
चतुर्भुज, कुमरकल्याण तथा ध्रुव
गुफा, महाप्रभुजीकी बैठक है।
मेला होता है। इससे

तालवन

—है, यहाँ श्रीबलरामजीने धेनुकासुर
और बलदेवजीका मन्दिर है।

कुमुदवन

–है। कपिल मुनिके दर्शन, लाल कदमके नीचे ठाकुरजीकी बैठक, महाप्रभुजीकी, गुसाईंजीकी बैठकें और विहारखुण्ड है। इसमें कमल बहुत होते हैं। यहाँसे लौटकर मधुवन आना होता है।

यहाँसे सतोहाके मार्गमें—

गिरिधरपुर

—में चामुण्डादेवीके दर्शन हैं।

शन्तनुकुण्ड (सतोहागाँव)

इसमें शान्तनुकुण्ड, गिरिधारीजी, बलदेवजी और शान्तनुके मन्दिर हैं, गोसाईंजीकी बैठक है। सन्तानकी इच्छावाले इस कुण्डमें स्नान करते हैं और बलदेवजी तथा शन्तनु महाराजके मन्दिरके पीछे गोबरके सतिये (स्वस्तिक) रखते हैं। भादों सुदी छट्ठिको यहाँ बड़ा मेला होता है और हर रविवारी सप्तमीको भी मेला होता है। इससे आगे–

दतियागाँव

– है, जहाँ भगवान्‌ने भागकर आये हुए दन्तवक्त्रको मारा है, इस समय आप व्रजमें फिर आये थे। इससे आगे–

गन्धर्वेश्वर (गणेशरागाँव)

–है। यहाँ गन्धर्वकुण्ड है। इससे आगे–

(खेचरीगाँव)

–है (यह पूतनाका गाँव है) 'सा खेचर्य्येकदोपेत्य पूतना नन्दगोकुलम्'

यहाँ भी एक कुण्ड है। (व्रजके जितने धाम हैं, इनमें यात्राके अनुसार, जैसे हम लिख रहे हैं, वैसे भी पहुँच सकते हैं और मथुरासे स्वतन्त्र मार्गसे भी पहुँच सकते हैं।) इससे आगे–

बहुलावन (वाटीगाँव)

– है। यहाँ कृष्णकुण्ड, कृष्ण-बलदेवजी तथा बहुलागायका मन्दिर है। महाप्रभुजीकी बैठक है। इससे आगे–सकनागाँव, बलभद्रकुण्ड और गोरे दाऊजीका मन्दिर है। इससे आगे—

तोषगाँव

–है। तोष भगवान्‌का सखा था, उसका यह गाँव है। यहाँ तोष-कुण्ड है। इससे आगे—

विहारवन

–है। यहाँ विहारवन, कदम्बखण्डी और चरणचिह्न हैं।

जाखिन (यक्षहन्‌गाँव)

यहाँ रोहिणीकुण्ड और बलदेवजीका मन्दिर है।

मुखराइ (मोक्षराजतीर्थ)

यहाँ मुखरा देवीका मन्दिर है। वाटीसे दूसरा मार्ग और है–

रारगाँव

–में बलभद्रकुण्ड, बलभद्रमन्दिर और कुछ हटकर कदम्बखण्डी है।

जसोदीगाँव

–में सूर्यकुण्ड है।

बसोदीगाँव

–में वसन्तकुण्ड, ललिताकुण्ड, राजकदम्ब वृक्षमें मुकुटका
बड़का वृक्ष है। यहाँ श्रीराधा-कृष्ण प्रथम ही झूला झूले हैं।

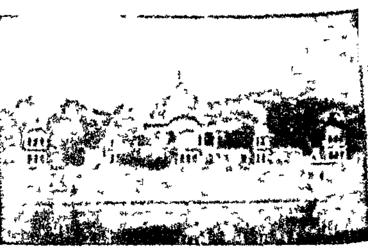
राधाकुण्ड

यहाँ राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, राधावल्लभ महाप्रभुजी, गोसाईंजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। बैठक उसे कहते हैं कि जहाँ बैठकर इन आचार्योंने श्रीमद्भागवतके सप्ताह-पारायण किये हैं। गोविन्ददेव (यहाँ गिरिराजकी जिह्वाके दर्शन हैं), पाण्डव-श्रीकृष्ण (वृक्षरूप) और बंगाली महात्माओंके स्थापन किये अनेक मन्दिर हैं। विष्णुस्वामिसम्प्रदायके प्रयागदत्तजी गोस्वामीकी धर्मशाला है। राधाकुण्डमें बहुत से अकिंचन बंगाली महात्मा निवास करते हैं। श्रीमहाप्रभु चैतन्यदेवके चरणाश्रित श्रीरघुनाथदास गोस्वामी यहीं विराजते थे और केवल मट्ठा पीकर तपस्या करते थे। चैतन्य चरितामृतके रचयिता श्रीकृष्णदास गोस्वामीजी भी यहाँ रहे थे। जिस समय भगवान् श्रीकृष्णने अरिष्टासुरको मारा था जो कि बैलके रूपमें था, तब गोप और गोपियोंने भगवान्से कहा कि 'तुमको बैलके मारनेकी हत्या लगी है, सो किसी तीर्थमें स्नान करके शुद्ध होओ।' तब श्रीराधिकाजीने अपने श्रीहस्तोंसे धरती खोदकर जल निकालना प्रारम्भ किया। इधर श्रीकृष्णने भी उसी प्रकार कुण्ड खोदा। इस प्रकार राधाकुण्ड और कृष्णकुण्ड बने। तब राधाकुण्डमें भगवान्ने स्नान किया। वह अरिष्टासुर जहाँ मारा गया था, उस स्थानका नाम अरिष्टगाँव हुआ और आजकल उसे अड़ींग कहते हैं।

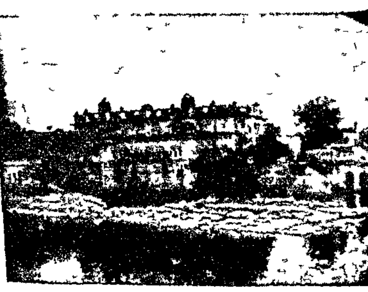


श्रीराधाकुण्ड

पृ० ४०



कुसुमसरोवर पृ० ४



मानसी गंगा, लाल महल (गोवर्द्धन) पृ०

राधाकुण्डमें इतने तीर्थ और हैं । जैसे कि—व्रजकुण्ड, विशाखाकुण्ड, ललिताकुण्ड, अष्टसखियोंके कुण्ड, गोपीकूप और इसके समीपमें उद्धवकुण्ड, जहाँ उद्धवजी एक रूपसे गुल्मलता बनकर निवास करते हैं और दूसरे रूपसे बदरिकाश्रममें । नारदकुण्ड और उद्धवजीके दर्शन हैं । इसके अनन्तर ग्वालपोखरा, रत्नसिंहासन तथा किलोलकुण्ड हैं ।

गोवर्धन

राधाकुण्डसे गोवर्धन तीन मील है । मार्गमें एक सरकारी पत्थर गड़ा हुआ है, जिसमें शिकार खेलने, मोर, हिरन आदि मारनेके निषेधका हिन्दी, फारसी और अंग्रेजीमें फर्मान है । इसी बीचमें बहुत रमणीक और विशाल अत्यन्त सुन्दर नकासीके कामका पत्थरका बना हुआ पक्का एक तालाब है, जिसको कुसुमसरोवर (कुसुमोखर) कहते हैं, जिसे भरतपुरके राजा सूरजमलके लड़के जवाहरसिंहने दिल्लीकी लूटके द्रव्यसे बनवाया था । इससे पूर्व यह साधारण बना हुआ था । इसके पास राजा सूरजमल जवाहरसिंहकी विशाल छत्री भी है, जो देखने ही योग्य है । गोवर्धन सात कोसका पर्वत है । इसको गिरिराज भी कहते हैं । गिरिराजकी ऊँचाई पहले बहुत थी, अब बहुत थोड़ी रह गयी है । पहले इनका दर्शन अड़ींगसे होता था, अब सौ-दो-सौ गजकी दूरीसे भी नहीं होता है । महानुभावोंसे ऐसा सुना है कि ज्यों-ज्यों कलियुग बढ़ता जाता है, ये तिल-तिलभर पृथ्वीमें धँसते जाते हैं और किसी दिन भूमें ही समा जायँगे । यहाँ भजनानन्दी बंगाली महात्मा रहते

करते हैं । यहाँ वज्रनाभके पधराये हुए हरिदेवजी थे । पर औरंगजेबके समयमें वे यहाँसे चले गये । अब उस स्थानपर दूसरा मूर्ति विराज रही है । यह मन्दिर बहुत सुन्दर है, इसके व्ययनिर्वाहार्थ कुछ गाँव भी लगे हैं । दूसरा मन्दिर चक्रेश्वर (चकलेश्वर) महादेवजीका है । यह भी वज्रनाभके पधराये हुए हैं । महाप्रभुजीकी बैठक है । दूसरी ओर गोसाईंजीकी बैठक है। चरणके चिह्न और मनसादेवीके दर्शन हैं । यहाँसे आगे बसईगाँव है, जहाँ नन्दरायजी बसे हैं । बसईकुण्ड, ब्रह्मकुण्ड है (पर इधर यात्रा नहीं जाती) मानसीगङ्गाके ऊपर गिरिराजजीका मुखारविन्द है, जिसमें मुकुटकी आकृतिका प्रत्यक्ष दर्शन होता है, यहीं गिरिराजजीका पूजन हुआ करता है । गिरिराजजीके ऊपर और आसपास गोवर्धनगाँव बस रहा है । आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमाको और कार्तिक कृष्णा अमावस्याको बड़ा मेला होता है । यहाँपर मानसी गङ्गा है । जिसको भगवान्‌ने अपने मनसे उत्पन्न किया था । इसके तीन तरफ बड़े सुन्दर घाट बने हुए हैं, चौथी तरफ गिरिराजजी विराजमान हैं, वास्तवमें मानसीगङ्गाके बीचमें गिरिराज हैं । यह एक अद्भुत दृश्य है । दीवालीके दिन इन घाटोंपर मनों घीके दीपक जलाये जाते हैं । उनकी जलके भीतर बड़ी शोभा दीखती है । यहाँकी दीपावली बड़ी ही दर्शनीय है । पहले यह भरतपुर राज्यमें था ।

मानसीगङ्गासे पश्चिम सखीतरा (सखीस्थलगाँव) है, जो चन्द्रावलिजीका श्वशुरालय है । गोवर्धनकी दण्डवती परिक्रमा भी बहुत दी जाती है । पहले पृथ्वीपर लेट जाते हैं और जहाँ-

तक हाथ फैलाते हैं वहाँ अँगुलीसे लकीर खींच देते हैं और फिर उठकर उसी लकीरसे आगेकी ओर दण्डवत् प्रणाम करते हैं, इसी तरह दण्डवत् प्रणाम करते चले जाते हैं और एक अठवारेसे लेकर पन्द्रह दिनतकमें इस प्रकारकी दण्डवती परिक्रमाको पूरी कर लेते हैं। कोई-कोई एक जगह १०८ परिक्रमा करके तब आगे बढ़ते हैं। कुछ-न-कुछ यात्री प्राय रोज ही परिक्रमा करते हैं। पूर्णिमाको अधिक परिक्रमा लगती है। (स्त्रियोंको दण्डवती परिक्रमा नहीं करनी चाहिये।) मानसीगङ्गापर श्रीलक्ष्मीनारायणजीका मन्दिर है जो कि उत्तर भारतमें श्रीरामानुजसम्प्रदायकी गोवर्धनगद्दीके नामसे प्रसिद्ध सिद्धस्थल है। गोवर्धनमें भरतपुरके राजाओंकी बनवायी हुई छत्रियाँ (समाधि) और दूसरी-दूसरी इमारतें बड़ी सुन्दर-सुन्दर हैं। एक-दो मन्दिर भी नये बने हुए अच्छे हैं। इसमें ये कुण्ड हैं— गोरोचन, धर्मरोचन, पापमोचन, ऋणमोचन। इनमें पिछले तो वर्षा-ऋतुके सिवा और ऋतुमें सूखे पड़े रहते हैं। पहले भी अच्छी दशामें नहीं हैं। एक निवृत्तकुण्ड भी है। यहाँ किशोरीलाल-अनाथालय है और कुँवर सज्जनसिंहजी सिंहवीकी धर्मशाला है। प्राय यात्री इसीमें बहुत ठहरा करते हैं, क्योंकि यहाँ बहुत आराम मिलता है। और भी कई धर्मशालाएँ हैं, सफ़ाखाने हैं, लड़के-लड़कियोंके स्कूल हैं। मथुरासे दीघको जो सड़क जाती है और गिरि गोवर्धनके ऊपर होकर जहाँपर निकलती है, वह स्थान दान-घाटी कहलाता है। यहाँ कृष्ण महाराज दान लिया करते थे और इस घाटीपर दानरायजीका मन्दिर भी है। इसी गोवर्धनके आस-पास बीस कोसके बीचमें सारस्वतकल्पमें वृन्दावन था और इसीके पास

यमुनाजी बहती थीं। जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

> वृन्दावनं गोवर्धनं यमुनापुलिनानि च।
> वीक्ष्यासीदुत्तमा प्रीती राममाधवयोर्नृप॥
> (१०।११।३६)

स्कन्दपुराणमें भी लिखा है—

> अहो वृन्दावनं रम्यं यत्र गोवर्धनो गिरिः।

बृहद्गौतमीय तन्त्रमें लिखा है—

> पञ्चयोजनमेवास्ति वनं मे देहरूपकम्।
> कालिन्दीयं सुषुम्नाख्या परमानन्दवाहिनी॥

जहाँ उस समय यमुनाजी बहती थीं, वहाँ जमनाउतोगाँ अबतक प्रसिद्ध है। यदि वर्तमान वृन्दावनको ही सारस्वतकल्प वृन्दावन माना जाय तो यह एक शङ्का उपस्थित होती कि यज्ञके बंद होनेपर इन्द्रने वर्षा करके ब्रजका नाश करना चाह था, तब गाय, गोप और गोपियोंकी प्रार्थनासे गोवर्धनको उठाक भगवान्ने ब्रजकी रक्षा की थी। पर ऐसी वर्षा होते रहते गोर्ध गायें और उनके बच्चे तथा सब घरका सामान वर्तमान वृन्दावन अठारह मील चलकर गोवर्धनतक सुरक्षित कैसे पहुँच सका था इसलिये मानना ही पड़ेगा कि उस समय अर्थात् सारस्वतकल्प गोवर्धनके पास ही वृन्दावन बसता था। वर्तमान वृन्दावनको वर्तमा श्वेतवाराहकल्पका मान लेना उचित प्रतीत होता है। प्रतिकल्प कुछ-कुछ लीलाओंमें भी तारतम्य हुआ करता है। अस्तु, यहाँसे

मार्ग हैं, एक तो सीधा चन्द्रसरोवरको, दूसरा 'जमनाउतो' होकर चन्द्रसरोवरको।

जमनाउतोगाँव

यहाँ जमनाजीका निकुञ्ज है, यहाँ अष्टसखाओंमेंसे कुम्भनदासजी निवास करते थे और आपके नामसे ही यहाँ पोखरा और खिड़क प्रसिद्ध हैं। आजकल यात्रा दानघाटीसे अड़ींग आदि स्थलोंमें होती हुई गोवर्धनके पूर्वभागसे पश्चिमभागको जाती है। पहले गोवर्धनसे 'न्हज' होकर 'परमदरे' जाती थी।

अड़ींग अरिष्टगाँव अथवा अरिग्रहगाँव

अरिष्टगाँवके नामका कारण तो पहले लिखा गया है। पर किन्हीं महानुभावोंका कथन है कि कंसके मरनेसे डरकर उसके आठ भाई मथुरासे भाग गये, उनको पकड़ने और मारनेके लिये बलभद्रजी पीछे-पीछे दौड़े और यहाँ आकर उनको पकड़ा तथा मारा। इससे इसका नाम 'अरिग्रह' और आजकल 'अड़ींग' हुआ। यहाँ बलदेवजीका मन्दिर और बलभद्रकुण्ड है। इससे भी यह कल्पना ठीक जँचती है। कोई कोई अरिष्टासुरकी कथाका सम्बन्ध भाण्डीरवनसे बताते हैं।

माधुरीकुण्ड

यहाँ माधुरी-मोहनका मन्दिर है। अब डेरीफार्म भी यहाँ बन गया है, इसकी गायें बहुत सुन्दर हैं। पर सुना जाता है कि यहाँ गायोंको फूका लगाकर दुहा जाता है, यदि ऐसा है तो बहुत अनर्थ है।

मदनपुरा

यह गाँव भरतनागायाका है।

दुवेलेका गाँव दुवेलाकुण्ड पारासौली

(परम रासस्थली)

यहाँ ही भगवान्‌ने गोपियोंके साथ शरत्पूनोको महारास किया था। रासचौंतरा, चन्द्रसखीका मन्दिर, महाप्रभुजी, गोसाईंजी गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं। श्रीनाथजीका जलघड़ा और इन्द्रके औंधे नगारे पड़े हैं। बहुत बड़े और भारी दुन्दुभीके आकारके दो पत्थर हैं, जिनमें बजानेसे नगाड़ोंकी-सी आवाज होती है।

यहाँ चन्द्रसरोवर है। रासके प्रारम्भमें चन्द्रोदय होनेसे चन्द्रमाकी किरणोंसे वन रँग गया था और चन्द्रमाका प्रतिबिम्ब इस सरोवरमें दीखता था। यहींपर ही अष्टछापके अनुपम कवि श्रीसूरदासजीने निम्नलिखित अन्तिम पद गाया था—

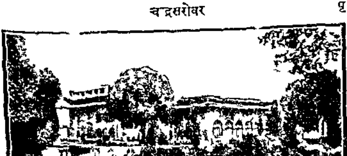
खंजन-नैन रूप रस माते।
अतिसै चारु चपल अनियारे,
पल पिंजरा न समाते॥
चलि चलि जात निकट स्रवननिके,
उलट पुलट ताटंक फँदाते।
'सूरदास' अंजन गुन अटके,
नतरु अबहि उड जाते॥

मोहकुण्ड पैठोगाँव

ब्रजमें घुसनेको (अंदर जानेको) पैठना कहते हैं—यहाँ



चन्द्रसरोवर पृ० ४६



गोपालभवन (डीग) पृ० ५०



संगमरमर झूला (डीग) पृ० ५१



भोजनथाली पृ० ५४

कृष्णके पैठनेकी गुफा है। चतुर्भुजनाथजीका मन्दिर है। नारायण-है। लक्ष्मीकूप, ऐंठाकदम्ब, क्षीरसागर और बलभद्रकुण्ड हैं।

बछगाँव (वत्सग्राम)

बछड़ोंके चरानेका स्थान। यहाँ ७ कुण्ड हैं—१ कनकसागर, २ सहस्रकुण्ड, ३ (माखन-चोर ठाकुर) रामकुण्ड, ४ अङ्गारो-कुण्ड, ५ (वत्सविहारी ठाकुर) रावरीकुण्ड, ६ सूर्यकुण्ड।

आन्यौर

इसके सम्बन्धमें ऐसा कहा करते हैं कि जब भगवान्ने गोवर्धनकी पूजा की और अन्नकूटका भोग लगाया, तब आप ही बहुत विशाल रूप धारण कर गिरिराजके ऊपर प्रत्यक्ष विराजमान होकर चारों ओरसे भोग लगाने (भोजन करने) लगे। उस समय यह भी कहते जाते थे कि 'आनो और' अर्थात् 'और लाओ' इसीसे उस स्थानका नाम आनोर या 'आन्यौर' पड़ गया। यहाँ महाप्रभु-जीकी बैठक है और 'गौरीकुण्ड' है। यहाँ श्रीराधिकाजीने गौरीका पूजन किया है। यहाँसे फिर गिरिराजजीका पूर्वीय भाग मिलता है। यहाँ गिरिराजजीमें कई प्रकारके विलक्षण चिह्न, दही-कटोरा, टोपी, मोजा आदिके दर्शन होते हैं और सङ्कर्षणकुण्ड, बलदेवजीका मन्दिर है। बाजनीशिला—जिसमें छड़ी या अँगुली लगानेसे आवाज होती है। आगे—

केसरीकुण्ड, गन्धर्वकुण्ड, गोविन्दकुण्ड

हैं। यहाँ ही इन्द्रने और सुरभीने भगवान्का प्रसिद्ध गोविन्दा-

भिषेक किया था। यहाँ ही भगवान्‌का गोविन्द नाम रक्खा गया था। गोविन्दकुण्डकी महिमा स्कन्दपुराण-वृन्दावनखण्डमें है—

यत्राभिषिक्तो भगवान्मघोना यदुवैरिणा।
गोविन्दकुण्ड तज्जात स्नानमात्रेण मोक्षदम्॥

महाप्रभुजीकी बैठक और चतुरानागाके यहाँ श्रीनाथजीके दर्शन हैं। यहाँ गिरिराजमें छड़ी (लाठी) का चिह्न है। मुकुट तथा हस्ताक्षरके चिह्न हैं। इससे दक्षिणकी ओर महादेवजी बैलपर बैठे हुए तथा श्रीराधाकृष्णके दर्शन होते हैं, पर कुछ दूरसे खड़े होनेपर होते हैं, पास जानेपर नहीं होते, केवल रेखा-से ही दीखते हैं। यह इसमें विचित्रता है। इससे आगे सिन्दूरीशिला है, जिसमें हाथ लगानेसे हाथमें सुर्खी आ जाती है। आगे गिरिराजका अन्तिम भाग है, जिसे पूँछरी कहते हैं। यहाँ अप्सराकुण्ड, नवलकुण्ड है। 'पूँछरीको लौठा' नामक गोपका मन्दिर है। यहाँ रामदासजीकी गुफा है। इससे आगे कृष्णदासजीभूतका कुआँ है। इससे आगे—

श्यामढाक

—है। यहाँ गोपीतलाव, गोपसागर, श्यामढाक ठाकुरजीका मन्दिर और जलघड़ा—ये चार स्थल हैं। श्यामतमालके नीचे बैठक है और अनेक विचित्र चिह्न हैं। यहाँसे आगे चारों ओर लीलास्थल हैं। इससे आगे-पीछेका क्रम नहीं है। 'चरणपाटी' है, जहाँ श्रीठाकुरजी, सुरभी गाय, एरावत हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ाके चरण चिह्न हैं। टूका बलदेवजीका मन्दिर, ऊपर बैठे हुए बलदेवजी तलहटीमें चरती हुई गायोंको 'टूक' झुककर

देखने रहते थे । कालीशिला (हाथको काला करनेवाली), सुरभीकुण्ड, ऐरावत कुण्ड और अष्टछापके प्रसिद्ध कवि श्रीगोविन्दस्वामीकी कदम्बखण्डी* और गुफा, हरजूकी पोखर, हरजूकुण्ड आदि स्थान हैं ।

जतीपुरा

इसमें श्रीवल्लभाचार्यके वंशज गोस्वामीकी सात गद्दियोंके सात मन्दिर हैं । यहाँ अन्नकूटके दर्शन अच्छे होते हैं । इसके अतिरिक्त गोस्वामियोंकी यात्रा जब यहाँ पहुँचती है तब भी अन्नकूटके से पदार्थ बनाकर भगवान्के भोग लगाते हैं । इसको 'कुनवाड़ा' कहते हैं । यह कुनवाड़ा जब तब किसी गोस्वामी अथवा सेवकका मनोरथ होता है तब भी हो जाता है । जतीपुरामें भी गिरिराजजीका मुखारविन्द बतलाया जाता है । उस स्थानपर गोस्वामिवृन्द श्रीनाथजीका-सा बड़ा सुन्दर शृङ्गार करते हैं । मुखारविन्दपर दूध बहुत चढ़ाया जाता है । जिससे कि दूधका नाला सा बह निकलता है । यहाँपर छोटा सा मन्दिर बन जाना चाहिये । अन्यथा कुत्ते, कौए इसे अपवित्र करते हैं और प्रसादी दूध भी पैरोंमें आता है । महाप्रभुजीकी बैठक, नाभिका चिह्न, श्रीनाथजीके प्रकट होनेका स्थान हैं । जतीपुरामें गिरिराजमें कई कन्दराएँ हैं और गिरिराजके ऊपर वर्षाकी बूँदोंके चिह्न दिखायी पड़ते हैं । तलहटीमें (नीचे) श्रीराधिकाजीका तीजका चबूतरा, दण्डोतीशिला आदि हैं । आगे—

---

* कदम्बखण्डी या क्यार कदम्बोंके सघन वनको कहते हैं । इनमें चौक और [illegible] बने होते हैं । यह दर्शनीय होते हैं ।

रुद्रकुण्ड (रुदनकुण्ड)

—यहाँ बाबू महादर्जीका मन्दिर, गुप्तकुण्ड, बिल्छुवन है। यहाँ भगवान्‌की कन्दुकक्रीड़ा (गेंदखेल) का स्थल (मैदान) है। यहाँ श्रीविठ्ठलनाथजीकी बैठक, जगन्नाथजी, पूर्णसरोवर आदि स्थल हैं।

गाँठौलीगाँव

गोपियोंने कौतुकवश श्रीराधा-कृष्णके उत्तरीय वस्त्रोंमें चुपके-चुपके गाँठ जोड़ दी है और जब दोनों उठके पधारने लगे हैं तब बड़ी हँसी की है। अहा——

कहत अयाने लोग, जहाँ गाँठ तहँ रस नहीं।
प्रगत सरल रसभोग, गँठजोड़ाकी गाँठमें॥

यहाँ भगवान् होली खेली है। यहाँ गुलालकुण्ड, महाप्रभुजी की बैठक, सिज्जा (शय्या) मन्दिर, टोंकको धनो, धैत (विजय गौर) आदि स्थल हैं। यहाँ बलभद्रकुण्ड और रेवतीकुण्ड हैं। ये सब स्थान गोवर्धनके आस-पास दोनों ओरको हैं।

डीग (लठावन)

यहाँसे भरतपुरका राज्य प्रारम्भ हो जाता है और कामवनतक रहता है। इसीसे भरतपुरनरेशोंको ब्रजेन्द्रकी पदवी है। पहले कभी सारा ब्रज इनके ही राज्यमें था। यहाँ भरतपुरनरेशके बनवाये दर्शनीय भवन हैं। उनमें फुहारे चलनेका अच्छा आनन्द रहता है। बिल्कुल वर्षा ऋतु झलक जाती है। ये फुहारे भादों बदी अमावसको चलते हैं, दाऊजीका मन्दिर है, भरतपुर राज्यका एक प्राचीन किला भी है। यहाँ एक सरोवर (रूपसागर) बड़ा सुन्दर है। डीगसे एक मार्ग—

नींवगॉंव

–गया है । यहीं श्रीनिम्बार्काचार्य निवास करते थे । दूसरा नींवगाँव महावनके पास है वहाँ उनका जन्म हुआ था । ये ही एक आचार्य एतद्देशीय ओर सो भी व्रजवासी हैं । अन्य तीनों आचार्य श्रीविष्णुस्वामी, श्रीरामानुज, श्रीमध्व दाक्षिणात्य हैं । निम्बार्कसम्प्रदायके अन्य विद्वान् श्रीनिम्बार्कको भी दाक्षिणात्य ही बतलाते हैं । नींवगाँवको एक मार्ग गोवर्धनसे भी गया है । नींवगाँवसे आगे–

पाडरगॉंव

–है । यहाँ पाडरगङ्गा हैं । कुञ्जेरागाँव है । डीगसे दूसरा मार्ग–

परमदरे (परममन्दिर) गॉंव

–को गया है । इसको 'प्रमोदन' भी कहा करते हैं । यहाँ कृष्णकुण्ड और श्रीदामाजीका मन्दिर है ।

वहज (वज्री) गॉंव

जहाँ इन्द्रने लज्जित होकर भगवान्‌की स्तुति की है । वेदशिरा, मुनिशीर्षगाँव हैं । परमदरेसे आगे—

आदिबद्री

–हैं । नन्दादि गोपोंको यहाँ ही बदरीनारायणका दर्शन कराया है । सेऊका गाँव, नयन सरोवर, अलखगङ्गा, खोह, फिर 'बड़े बद्री' और 'मानसरोवर' आदि बड़े अपूर्व मनोहर उत्तराखण्डके स्थल हैं । ...में बीचमें नारायण और इधर-उधर चन्द्र-कुबेर हैं । ...रमें व्यास, नर और बदरीनाथ हैं । एक

पहाड़में स्थान-स्थानपर किस स्थानसे कौन स्थान कितनी दूर है, यह खुदा हुआ मिलता है । यह गौड़िया गोस्वामियोंका परिश्रम है । खोहसे आगे श्वेत पर्वत, सुगन्धिशिला, नील पर्वत और आनन्दाद्रि (घाटी) हैं ।

इन्दरोलीगाँव

यह गाँव इन्दुलेखाजीका है । इसमें इन्दुलेखाकी निकुञ्ज, इन्दुकूप, इन्दुकुण्ड हैं ।

कामवन

इसको काम्यकवन भी कहते हैं । पाँचों पाण्डव वनवासके समय इसमें रहे थे । यह भी वृन्दावन है, यहाँ गोविन्ददेवजीके मन्दिरमें वृन्दादेवीका मन्दिर भी है । यहाँ भी श्रीकृष्णने दान अथवा कर गोपियोंसे लिया था । जैसा कि श्रीमद्भागवतमें लिखा है—'कदाचिद्यूपचेष्टया' और—

> एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे ।
> निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः ॥
> (१० । १४ । ६१)

ये लीलाएँ कामवनमें हुई हैं ।

यहाँ चौरासी तीर्थ हैं । मधुसूदनकुण्ड, यशोदाकुण्ड, सेतुबन्धरामेश्वर, चक्रतीर्थ, लङ्कापलङ्काकुण्ड, लुकलुककुण्ड जिसे श्यामकुण्ड भी कहते हैं । लुकलुककन्दरा—यहाँ श्रीकृष्णचन्द्र आँखमिचौनी खेले हैं और कन्दरामें छिपकर पर्वतपर प्रकट हुए हैं, वंशी बजायी है । चरणपहाड़ी, जिसपर भगवान्‌के अकृत्रिम

चरणचिह्नोंका दर्शन होता है । महोन्धिकुण्ड, उटकी-पसेरी। जब गोपियाँ यशोदाजीसे भगवान्की माखन-चोरीका उलाहना देने लगी हैं तब यशोदाजीने वे बड़े-बड़े पत्थर जिनमें एक छोटा है उसको उटंकी बताकर, जो बड़ा है उसको पसेरी बताकर (जो वास्तवमें छटाँक और पाँच सेरसे बहुत भारी हैं) कह दिया कि इनसे माखन-दही तोलकर—

जाको जाको खायो सोई ले जाओ री ।
गारी मत दीजो मो गरीबनीको जायो री ॥

रत्नाकरसागर, ललिताजीकी बारहद्वारी, नन्दकूप, नन्दबैठक, मोतीकुण्ड, देवीकुण्ड, गयाकुण्ड, गदाधर भगवान्के दर्शन, प्रयाग-कुण्ड, काशीकुण्ड, गोमतीकुण्ड, श्रीदामादि पञ्चगोपकुण्ड, घोषरानी (यशोदा) कुण्ड, यशोदाजीका पीहर है । गोपराज पिताका नाम है । गोपीनाथजीका मन्दिर, चौरासी खम्भा—जिसके चौरासी खम्भे गिने नहीं जाते—श्रीकृष्णचैतन्य सम्प्रदायके गोपीनाथजी, गोविन्ददेवजी, मदनमोहनजी, राधावल्लभजीके मन्दिर, श्रीवल्लभसम्प्रदायके कृष्णचन्द्रमाजी, नवनीतप्रियाजी, मदनमोहनजीके मन्दिर, श्वेतवाराहका मन्दिर, सूर्यकुण्ड, गोपालकुण्ड, राधाकुण्ड, शीतलाकुण्ड, ब्रह्माजीका मन्दिर, ब्रह्माकुण्ड, श्रीकुण्ड, महाप्रभुजी, गोसाईंजी, गोकुलनाथजीकी बैठकें, खिसलनीशिला, कामसागर, व्योमासुरकी गुफा । व्योमासुर गोपका रूप धारण कर भगवान् और गोपोंके साथ खेलको खेलता हुआ खेलमें छोटे ... गोपोंको

गुफामें डाल आता था। भगवान्‌ने उसकी इस करतूतको देखकर उसे मारा और ग्वालोंको गुफासे निकाला। कदम्ब, मुकुट, हाथ इनके चिह्न हैं। नीचे उतरकर बलदेवजीके बायें चरणका चिह्न है (मथुरामें बलदेवजीके दक्षिण चरणका चिह्न है)।

भोजन थाली—यहाँ पहाड़पर पत्थरकी स्वतःसिद्ध अनेक थालियाँ बनी हुई हैं। भोगकटोरा, कृष्णकुण्ड, चरणकुण्ड, गरुड़कुण्ड, रामकुण्ड, राममन्दिर, व्योमासुरकी गुफा, कामेश्वर महादेवका मन्दिर—ये महादेव वज्रनाभके पधराये हुए हैं। चन्द्रभागाकुण्ड, वाराहकुण्ड, पाँचों पाण्डवोंका मन्दिर, चारों युगोंके महादेव, धर्मकुण्ड, धर्मकूप, यज्ञतीर्थ, मनकामनाकुण्ड, इन्द्रमन्दिर, विमलकुण्ड—यह तीर्थराज है—हिंडोलेका स्थान, सुनहरी कदम्बखण्डी, रासमण्डलका चबूतरा, कुञ्जमें जलशय्या, विहारका स्थान, यहाँ सखियोंने फूलोंकी सेज श्रीराधाकृष्णके लिये बनायी है। फूलोंके पंखेसे श्रम दूर किया है। यहींपर जावकके चिह्न हैं। इन नामोंके देखनेसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह भी वृन्दावन है। यहाँसे भी आदिबद्रीस्थानको मार्ग गया है। पूर्वोक्त कुण्डोंमेंसे बहुत-से सूख गये हैं। बहुतोंका पता भी नहीं है। कामवनसे आगे—

कनवारोगाँव

—है। यहाँ भगवान् हिंडोलेमें झूले हैं, यहाँ कृष्णके और दाऊजीके चरण चिह्न हैं। ऐसा कोई-कोई कहते हैं। यहाँ कर्णकुण्ड है, सुनहराकी कदम्बखण्डी है, पनिहारीकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ठाकुरजीकी बैठक, बाबा वल्लभजीकी बैठक इत्यादि हैं। इससे आगे—

चित्र-विचित्र शिला

—है। इसमें रेखाओंके चिह्न हैं और छप्पन कटोराओंके चिह्न हैं। राधाजीके चरणचिह्न हैं, माणिकशिला और देहकुण्ड हैं। इससे आगे—

ऊँचोगाँव

—है। यह श्रीबलदेवजीकी लीलाभूमि है। यहाँ श्रीबलदेवजीका रासमण्डल है। सयोगतीर्थ है। श्रीराधाकृष्णका यहाँ विवाह हुआ है ऐसा भी कोई-कोई मानते हैं। यह गाँव श्रीललिताजीकी जन्म-भूमि है ऐसा कहते हैं। यहाँ परमभक्त महाविद्वान् श्रीनारायणभट्टजी हो गये हैं। जिन्होंने व्रजमहिमाके सम्बन्धमें १०८ ग्रन्थ बनाये हैं। नन्दगाँव और बरसानेके निवासी इन्हींके शिष्य हैं। यहाँ भी श्रीविष्णुस्वामिसम्प्रदायके गोस्वामियोंका एक दर्शनीय मन्दिर है। ऊँचोगाँवसे आगे भानोखर (भानुसरोवर), वृषभानु-कुण्ड, रावड़ीकुण्ड, पाँवड़ी (खड़ाऊ) कुण्ड, शीतलकुण्ड, तिलककुण्ड, ललिताकुण्ड, विशाखाकुण्ड, कुहककुण्ड, मोरकुण्ड, जलविहारकुण्ड, दोहनीकुण्ड, यहाँ नन्दबाबाकी गायोंकी दोहनी धोयी जाती थी। यहाँ ही पहले-पहल श्रीयशोदाजीने श्रीराधा-कृष्णके युगल जोड़ीके दर्शन किये थे और ईश्वरसे प्रार्थना की थी कि मेरे लालाका विवाह इसी लालीके साथ हो, सूर्यकुण्ड, नौवारी-चौवारी-स्थान और रत्नकुण्ड है। आगे—

डभारोगाँव

—है, सखीका गाँव है।

बरसाना

इसको बरसानु, ब्रह्मसानु और वृषभानुपुर भी कहा करते हैं। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी है। यह वृषभानु और कीर्ति रानीकी राजधानी है। यह पहाड़ी ब्रह्माजीका रूप है। इसके जो चार शिख हैं वे ही चार मुख हैं। (इसी प्रकार नन्दगाँवमें जो पहाड़ी है वह शिवजीका रूप है और गोवर्धन विष्णुका रूप है) यहाँ मोरकुटी, मानगृह (गढ़) है, जहाँ मानवती राधाजीको भगवान्‌ने मनाया था। विलासगढ़ (गृह), सकीर्णपथ (साँकरीखोर)—यहाँ एक विचित्रता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्ग रूप नावके से आकारका एक ही पत्थर है जो धरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखनेसे ही मालूम होती है। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ियोंकी द्रोणी (खो) में बरसाना बसा है। दोनों पर्वत जहाँ मिलते हैं, वहाँ ऐसी एक तंग घाटी है कि अकेला मनुष्य भी कठिनतासे निकल सकता है। इस स्थानका नाम साँकरीखोर है। भादों सुदी अष्टमीसे चतुर्दशीतक यहाँ बहुत सुन्दर मेला होता है और इसी प्रकार फाल्गुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमीको होलीकी लीला होती है। यहाँकी होली दर्शनीय है।

विहारवन, गहवर (गह्वर) वन

यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शङ्खका चिह्न, महाप्रभुजीकी बैठक, दानगढ़—यहाँ जयपुरके महाराज माधवसिंह-



श्रीलाड़लीजी (राधाजी) का मंदिर (बरसाना) पृ० ५६

बरसाना

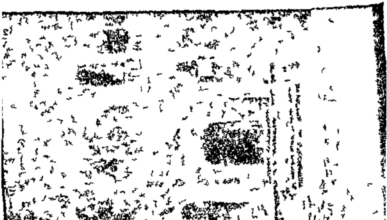
इसको बरसानु, ब्रह्मसानु और वृषभानुपुर भी कहा करते हैं। यहाँ एक छोटी-सी पहाड़ी है। यह वृषभानु और कीर्ति रानाकी राजधानी है। यह पहाड़ी ब्रह्माजीका रूप है। इसके जो चार शिखर हैं वे ही चार मुख हैं। (इसी प्रकार नन्दगाँवमें जो पहाड़ी है वह शिवजीका रूप है और गोवर्धन विष्णुका रूप है) यहाँ मोरकुटी, मानगृह (गढ़) है, जहाँ मानवती राधाजीको भगवान्‌ने मनाया था। विलासगढ़ (गृह), सकीर्णपथ (साँकरीखोर)—यहाँ एक विचित्रता है। दोनों पहाड़ोंका अङ्ग-रूप नावके से आकारका एक ही पत्थर है जो धरतीपर जम रहा है। इसकी विचित्रता देखनेसे ही मालूम होती है। बरसानेके दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी और है, इन दोनों पहाड़ियोंकी द्रोणी (खौ) में बरसाना बसा है। दोनों पर्वत जहाँ मिलते हैं, वहाँ ऐसी एक तंग घाटी है कि अकेला मनुष्य भी कठिनतासे निकल सकता है। इसी स्थानका नाम साँकरीखोर है। भादों सुदी अष्टमीसे चतुर्दशीतक यहाँ बहुत सुन्दर मेला होता है और इसी प्रकार फाल्गुन सुदी अष्टमी, नवमी और दशमीको होलीकी लीला होती है। यहाँकी होली दर्शनीय है।

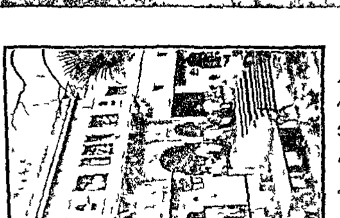
बिहारवन, गहवर (गह्वर) वन

यह बहुत ही रमणीक स्थान है। शङ्खका चिह्न, महाप्रभुजीकी बैठक, दानगढ़—यहाँ जयपुरके महाराज माधवसिंह-

श्रीलाड़लीजी (राधाजी) का मन्दिर (बरसाना)　　　पृ० ५६

जकी झाँकी





राधागोपालजीका मंदिर (प्रेमसरोवर) पृ० ५८

जीका बनवाया हुआ मन्दिर बहुत सुन्दर है, जयपुरकी पत्थरकी कारीगरी देखनेयोग्य है। गायके स्तनोंका चिह्न, लाडलीजी (राधाजी) का मन्दिर—यही यहाँ प्रधान हैं। नारायणभट्टजीके शिष्य नारायणदासजी ब्राह्मण यहाँ भजन किया करते थे। उनको स्वप्नमें श्रीलाडलीजीने दर्शन दिये कि जहा बैठकर तू भजन करता है उसके नीचे मैं हूँ। मुझे निकाल ले और मेरा मन्दिर बना। उन्होंने यह समझकर कि न तो मुझसे मन्दिर बन सकेगा, न सेवा-पूजा हो सकेगी और भजनमें विघ्न होगा, मूर्ति न निकाली। फिर स्वप्न हुआ तब उसने धरती खोदकर महारानीको निकाला और कुटी बनाकर उनकी सेवा-पूजा करने लगा। फिर स्वप्नमें ही विवाह करनेकी उसे आज्ञा हुई और कुछ दिन बाद एक ब्राह्मणने अपनी कन्या उसे ब्याह दी। उसीके वंशधर बरसानेके गोसाईं हैं—ऐसा लोग कहा करते हैं। जब पहाड़ीके नीचेसे इस मन्दिरपर दृष्टि जाती है तब बड़ी शोभा दीखती है। जब लाडलीजीके मन्दिरसे सीढ़ियोंपर नीचे उतरते हैं तब बीच में राधाजीके पितामह महिभानुका मन्दिर आता है। दूसरा मन्दिर वृषभानुका है। जिसमें वृषभानुजीकी पूरी मूर्ति है और एक ओर श्रीराधिकाजी हैं तथा दूसरी ओर राधिकाजीके भाई श्रीदामाजी हैं। राधिकाजीकी ललिता, विशाखा, चम्पकलता, रंगदेवी, चित्रलेखा, इन्दुलेखा, सुदेवी, तुङ्गविद्या—इन अष्ट सखियोंके मन्दिर हैं।

बरसानेमें सनाढ्य ब्राह्मण रूपराम कटारेके बनवाये हुए महल, सरोवर बहुत हैं। ये ब्राह्मण बड़े पण्डित, बड़े धनी और बड़े उदार थे। मुसलमानोंने बरसानेका भी बहुत नाश

किया था । चिकसौली (चित्रशाली), मुक्ताकुण्ड, पीलीपोखर (प्रियाकुण्ड)—यहाँ श्रीप्रियाजी अभ्यङ्ग उद्वर्त्तन करके स्नान करती थीं । यहाँ यह भी प्रसिद्ध है कि राधिकाजीने (विवाहके पीछे) अपने पीले हाथ यहाँ धोये हैं, इससे इसका नाम पीरीपोखर हो गया है । पीढ़खोर—यहाँ पीढ़के वृक्ष बहुत हैं, इससे आगे—

प्रेमसरोवर

—है यह बहुत विशाल, बड़ा सुन्दर सरोवर है । यहाँ महाप्रभुजीकी बैठक है । यहाँ रामगढ़निवासी सेठ घनश्यामदासजीके पुत्र सेठ लक्ष्मी-नारायणजी पोद्दारका बनवाया हुआ श्रीराधा-गोपालजीका मन्दिर है, जहाँ एक संस्कृत पाठशाला है । यहाँपर अक्षय अन्नसत्र है चाहे जितने अभ्यागत आवें सबोंको दाल आटा दिया जाता है ब्राह्मणोंको भोजन कराया जाता है और जो कोई विद्वान् यहाँ पधारते हैं उनको भी प्रसाद दिया जाता है । विद्यार्थियोंको भी सामान यहाँसे ही मिलता है । भादोंमें और फाल्गुनमें बड़े मेले होते हैं । इस मन्दिरसे प्रेमसरोवरकी शोभा है और बीचमें है । राधागोपालजीके मन्दिरके सम्बन्धमें साहित्येन्दु सेठ श्रीकन्हैयालालजी पोद्दारने यह कहा है—

उत आवत हैं नँदलाल इतै अलि आव रही वृषभानुकुमारी ।
मिलि प्रेमसरोवर भेंट भई यह प्रेम निकुंज नवीन निहारी ॥
चित चाहतु है इत ही रहिये यह कीन्ह विनय प्रियसों जब प्यारी ।
तब नित्य निवास कियो इत है मिलि राधे गुविंद निकुंजविहारी ॥

प्रेमसरोवरमें रासचौंतरा, प्रेमबिहारीका मन्दिर और वैठलनाथजीकी बैठक है।

इससे आगे—

संकेत

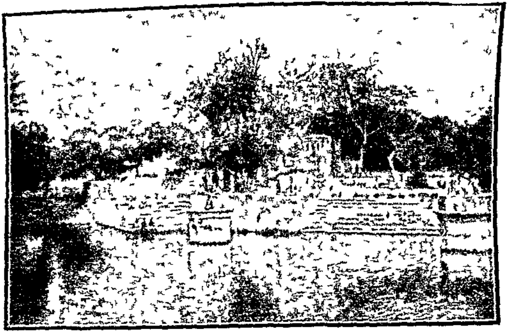
है, जहाँ समय-समयपर श्रीराधा और श्रीकृष्ण मिला करते थे। ऐसी प्रसिद्धि है कि ब्रह्माजीने श्रीकृष्णका विवाह श्रीराधिकाके साथ यहाँ ही कराया था। इसीसे पीरीपोखरवाली भी प्रसिद्ध हुई है। यहाँ रासमण्डलका चबूतरा, का स्थान, रंगमहल, शय्यामन्दिर, विह्वलादेवी, विह्वलकुण्ड संकेत बिहारीका मन्दिर आदि स्थान हैं। महाप्रभुजीकी क है। और राधारमणजीका मन्दिर, श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकी क है। इससे आगे—

रीठौरा (रिखेरा) गाँव

। यह चन्द्रावलीजीका गाँव है। यहाँ चन्द्रावलीकुण्ड है, चन्द्रावली की बैठक है। चन्द्रावलीजीका कुञ्जभवन है। ठाकुरजीकी क, महाप्रभुजीकी बैठक है। यशोदामन्दिर, ललितामन्दिर, ललिताकुञ्ज, रासमण्डलका चौंतरा, हिंडोलेका स्थान, विशाखाजीकी , विशाखाकुण्ड विशालकुण्ड, कदम्बकुञ्ज, मधुसूदनकुण्ड, नकुण्ड–भगवान्‌की रूप-माधुरीको देखकर ब्रजवासी मोहित हो , सुध बुध नहीं रही, तब भगवान्‌ने वंशी बजाकर उनको चेत किया, उस दिनसे ब्रजवासियोंने भगवान्‌का मोहन नाम खा। हाऊ बिलाऊ–यहाँ यशोदाजीने श्रीकृष्णको डराया है—

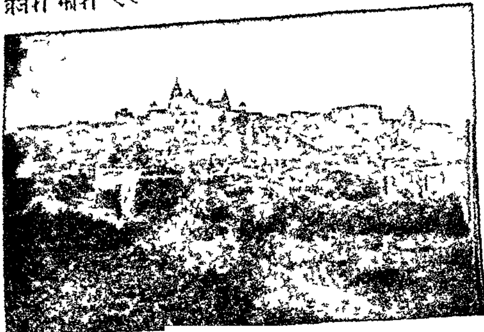
'मत जाओ लला मेरे हाऊ आयो है'

दधि बिलोनेका माट—यह इतना बड़ा है कि इसमें एक आदमी छिपकर बैठ सकता है । पग्नतीर्थ, बेंखुण्ड, पनिहा गाँव पनिहारीकुण्ड—श्रीयशोदाजीके घर यहाँसे ही ज जाता था, उसीको भगवान् पीते थे । चरणपहाड़ी, जहाँ भगवान्के चरणचिह्न हैं । नन्दगाँव, चौडोखर (चरणकुण्ड) रोहिणी-मोहिनीकुण्ड, गायोंका खूँटा, गायोंका खिरक 'पान-सरोवर' (पावन सरोवर)—यह भी एक दर्शनीय स्था है । श्रीवल्लभाचार्यजीकी बैठक, श्रीसनातन गोस्वामीजीकी कुटी, मोतीकुण्ड, फुलवारी-उद्यान, श्यामपीपरी (कारा पीपर) टेर कदम्ब, श्रीरूपगोस्वामीकी कुटी, कृष्णकुण्ड, आशकुण्ड आशेश्वर महादेव, कृष्णकुण्ड, जलविहार, कुहककुण्ड, छाछकुण्ड उद्धिहारी देवी, जोगियाकुण्ड, वृक्षकी खोंतरमें भण्डार, अक्रूरबैठक— अक्रूरजी कृष्णको लिवाने गये यह लीला, वज्रकुण्ड, वज्रव ललिता मोहन विशाखा उद्धवकुण्ड, उद्धवके क्यार—कदम्ब वृक्षोंकी क्यारी—हैं । इनमेंसे एक वृक्षमें स्वत दोने उत्पन्न हो हैं जिनमें छटाँकभर वस्तु आ सके 'तोरत पात बनाय ले दोना' उद्धवकी बैठक—जहाँ उद्धवजीने गोपियोंको श्रीकृष्णका स सुनाया है । नन्दपोखरा, यशोदाकुण्ड, मधुसूदनकुण्ड, नृ (नरसिंगा) नाद, नन्दराय, श्रीकृष्ण, बलदेव, यशोदा एक मन्दि विराज रहे हैं । यही प्रधान मन्दिर है । यह बहुत विशाल सुन्दर है । नन्दीश्वर महादेव—ये वज्रनाभके पधराये हुए 'देखो री एक बाला योगी द्वारे मेरे आया है री ।' यह लीला यशोदानन्दन, विहारीजी और चतुरानागके ठाकुर हैं ।



प्रेमसरोवर

पृ० ५८



नन्दगाँव

को नन्दिग्राम कहते हैं, यह नन्दबाबाकी राजधानी है । हाड़के ऊपर बसा है । पहाड़के ऊपर श्रीराधाजीके और श्रीकृष्णचन्द्रजीके चरणचिह्न हैं । नन्दीश्वरके वायु-कोणमें 'गेंदोखर' गेंद खेलनेका स्थान है । कदम्बवन—हाँ दाऊजीके भगवान्ने चरण दाबे हैं । महिरानोगाँव—मिनन्द गोपकी गोशाला । साचौलीगाँव, गिडोयोगाँव, नन्दगाँवसे र जावट, पाडरगंगा (पीवन), किशोरीकुण्ड, कोकिलावन जावटसे पश्चिम)—जहाँ कोयलकी भाँति आप बोले हैं । तीसे 'कोकिलास्वरभूषण' आपका नाम है । सघन वृक्षोंका बहुत न्दर वन है । इससे आगे पूर्णमासीकुण्ड (पूर्णमासी श्रीनन्दकी रोहितानी हैं), दौमन (दोऊ मिलन), कदम्बखण्डी, रुनकी नकीकुण्ड, कजरीवन, कृष्णकुण्ड, आँजनोगाँव, अँजनोखर अञ्जनकुण्ड) है । आँजनीशिला है । इसमें एक विचित्रता है शिलापर उँगली रगड़नेसे कोई चिह्न नहीं होता है पर उसी उँगलीको आँखोंमें लगानेसे आँखोंमें अञ्जन लगा-सा मालूम देता । यहाँ श्रीकृष्णने श्रीराधाजीके नयनोंमें अञ्जन लगाया था । सी भक्तने कहा है—

धन्या गोकुलकन्या वयमिह मन्यामहे जगति ।
यासां नयनसरोजे अञ्जनभूतो निरञ्जनो वसति ॥

सीपरसोंगाँव (शीघ्र परश्व)

–है जब अक्रूरजीके साथ भगवान् मथुराको पधारे हैं और गो
विह्वल होकर रथके नीचे मरनेके लिये आने लगी हैं तब भगवा
कहा है–'शीघ्र परसों ही आऊँगा।' इसपर भक्तने कहा है
'परसों पिया आवन कह जु गये कब आवेगी बैरन वह पर

गोकुण्ड–यहाँ विलासवट है, हंससरोवर, सारसवन–
भगवान्ने पुष्पचयन करके राधाजीकी वेनी गूँथी थी।

पसायोगाँव

–कदम्बखण्डी–यहाँ जब श्रीकृष्णजीको प्यास लगी तब
श्रीराधिकाजी सखियोंसहित जल लायीं और श्रीठाकुरजीको पिलाया।
यहाँ तृषाकुण्ड और विशाखाकुण्ड हैं। खदिरवन (खायरो)–
यहाँ गायोंका खिड़क है, कुण्डलवन–यहाँ भगवान्के कुण्डल
खो गये थे, जिन्हें गोपियोंने ढूँढ़कर भगवान्को पहनाया था
मदनकुण्ड, डकाराकुण्ड, चिन्तापुरी, गोपीनाथजी औ
दाऊजीके दर्शन, बलभद्रकुण्ड, नेत्रकुण्ड, चीर-तलाई, बकथर
(बकस्थल)–यहाँ भगवान्ने बकासुरको मारा था। बिल्ववन
मोक्षस्थली, भदावल (भाड़ागार)–इसकी वाराहपुराणमें
बड़ी प्रशंसा है–चमई (विशाखाजीका जन्मस्थान)–

करहला

–(ललिताजीका जन्मस्थान) कंकणकुण्ड, कदम्बखण्डी, हिंडोलाव
स्थान, महाप्रभुजी, गोसाईंजी और गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं
करहलामें शुद्ध, सरस रासलीला करनेवाले कई भक्त हो गये हैं औ

अब भी है। श्रीनाथजीके मुकुटके दर्शन हैं। वृषभानुजीका उपवन है। निगोही, सहार—यहाँ महेश्वरकुण्ड, माणिककुण्ड है। इसमें भूमि खोदनेसे एक पुराना मन्दिर और पुरानी वस्तुएँ निकली थीं। साखी (शङ्खचूड़के वधका स्थान)—यहाँ रामकुण्ड है। गरवट—इसमें किशोरीकुण्ड, चीरकुण्ड, हिंडोलेका स्थान है। (हिंडोलेका स्थान उसको कहते हैं जहाँ वृक्ष इस प्रकारसे खड़े हों मानो हिंडोला बना हुआ है।) गाँवके दूसरी ओर पाडरकुण्ड है।

पाडरकुण्डके सामने नरकुण्ड है। यहाँ पाँचों पाण्डव और नारायणके वृक्ष हैं। कोकिलावन—जहाँ कोकिलाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, विहारीकुण्ड, महाप्रभुजीकी बैठक, पाण्डवगङ्गास्थान हैं। इसमें बड़े सघन वृक्ष हैं और यह बहुत बड़ा वन है, देखनेयोग्य है। बड़ी बठैन—जहाँ बलभद्रकुण्ड, दाऊजीका मन्दिर है। छोटी बठैन—यहाँ कृष्णकुण्ड, साक्षीगोपालका मन्दिर है।

बैन्दोखर

यहाँ चरणगङ्गा, चरणपहाड़ी—इसमें सूर्य, चन्द्रमा, गौ, घोड़ा और ठाकुरजीके चरणोंके चिह्न हैं। पौढ़ानाथजीके दर्शन, मटकोंका खिड़क है। यहाँ गो-दोहन करके मटकोंमें दूध भरकर नन्दगाँव भेजा जाता था। ये सब स्थल बरसाने नन्दगाँवके आस पास चारों ओर हैं। इनमें आगे-पीछेका क्रम नहीं है। इनमें बरसानेसे भी जा सकते हैं और नन्दगाँवसे भी।

रासौलीग्राम

यहाँ रासमण्डलका चबूतरा, रासकुण्ड, श्रीनाथजीका जलघड़ा, श्रीनाथजीकी बैठक है। श्रीनाथजीके जलघड़ाके आगे—

कामरगाँव

—है (मैया मेरी कामर चान लई) । कामरमें गोपीकुण्ड, गोपी जलविहार, हरिकुण्ड, मोहनकुण्ड, मोहनजीका मन्दिर, दुर्वासाजीका मन्दिर है ।

दधिगाँव (दहगाँव)

यहाँ भगवान्‌ने दधिलीला की है । यहाँ दधिकुण्ड, दधिहारीदेवी, व्रजभूषण मन्दिर (वृक्षमें), मुकुटका चिह्न, सात सखियोंका क्रीड़ा स्थान—यहाँ भादों सुदी षष्ठीको मेला होता है । यहाँ वेणु नाद करके और नाम ले लेकर वनमें दूर गयी गायोंको भगवान्‌ने बुलाया है—'वेणुनाह्वयति गा म यदा हि ।' (श्रीमद्भागवत) कोटवन—भगवान्‌ने लताओंका यहाँ कोट बनवाया है । यहाँ कदम्बखण्डी है । यहाँ महाप्रभुजीकी बैठक है । यहीं यशोदाजीको भगवान्‌ने रास दिखलाया है । चमेलीवन—यहाँ राम, लक्ष्मण, सीताजी, हनुमान् नामके कुण्ड और हनुमान्‌जीका मन्दिर है । गहनवन, गोपालगढ़, गोपालकुण्ड, रत्नवन, फारैन—यहाँ होलीकी लीला की है । यहाँ प्रह्लादकुण्ड है । यहा होलिका दहनके दिन एक ब्राह्मण जो पाँड़े कहलाता है सारे दिन निर्जल व्रत करता है और होलीके समय कुण्डमें स्नान करके जलती हुई होली जिसके पास होला भूननेको भी लोग खड़े नहीं रह सकते उसके बीचमें होकर निकलता है । होलीको फाड़कर निकलनेसे उस गाँवका नाम फारैन हुआ है । फारैनसे आगे—

शेषशायी

यहाँ दाऊजीने शेषजीका और भगवान्‌ने लक्ष्मी-नारायणजीका रूप धारण किया है। यह रूप अपने ग्वाल बाल सखाओंको दिखाया है । पोढानाथके दर्शन, क्षीर-सागर, हिंडोलेका स्थान, दूसरी ओर महाप्रभुजीकी बैठक है। यहाँसे कोसीको मार्ग जाता है। नन्दगाँवसे भी कोसीको मार्ग जाता है पर यात्राके और स्थान रह जाते हैं इससे यही मार्ग ठीक है।

कोसी

नाज और कपासकी बहुत बड़ी मण्डी है । इसको कुशस्थली भी कहते हैं। इसमें रत्नाकरकुण्ड, मायाकुण्ड, विशाखा-कुण्ड और गोमतीकुण्ड हैं। यहाँ दशहरा और चैत सुदी द्वितीयाको फूलडोलका मेला होता है।

छाता

कोसीसे दक्षिणमें है, यह मथुरा जिलेकी एक तहसील है। कभी श्रीकृष्णने यहाँ छत्र धारण-लीला की थी। इससे इसका नाम छाता हुआ। यहाँ छत्रवन था (अब नहीं है)। यहाँ सूर्यकुण्ड है जो नगरसे अब कुछ अलग है। कोई-कोई कोसी नहीं जाते हैं। उनका मार्ग शेषशायीसे नन्दनवन, चन्दनवन, बुखराईताल, बुखराईसे बढाघाट, यहाँ कालीदहकी लीला है। श्रीमद्भागवतकी कालियमर्दनकी [illegible] यहाँ ही होनी चाहिये। उझानीघाट, खेलन वन, [illegible] [illegible]गे शेरगढ है। दूसरा मार्ग कोसीसे [illegible]

यहाँमे पै (पय) गाँव, श्यामकुण्ड, नारदकुण्ड, प्रह्लादकुण्ड, चतुर्भुजनाथ और राधिकाजीका मन्दिर है। यहाँमे आगे—

शेरगढ़

—है। दाऊजीने द्वारकासे आकर रास किया है और उसी समय हलसे यमुनाजीको खींचा है। यहाँ रामघाटमें गोरे दाऊजीका मन्दिर है। यहाँ यमुनाजी अबतक खिंची-सी दीखती हैं। उससे आगे ब्रह्मघाट है। यहाँ ब्रह्माजीने तप करके बछड़े चुरानेका दोष क्षमा कराया है। उससे आगे आभूषणवन है, जहाँ गोपियोंने भगवान्का शृङ्गार फूलोंसे किया है। उसमे आगे निवारणवन—जहाँ शृङ्गारनिवारण किया है। यहाँ सिंघाड़े फूल बहुत होते हैं। गुञ्जावन*—यहाँ गुञ्जा (घिरमिटी) की माला बनाकर गोपियोंने भगवान्का शृङ्गार किया है। श्रीमद्भागवत (१० । १४ । १) में लिखा है—

'गुञ्जावतसपरिपिच्छलसन्मुखाय'

विहारवन—विहारीजीके दर्शन और विहारकुण्ड हैं। कजरौटगाँवसे आगे दूसरी ओर अक्षयवट, अक्षय विहारीके दर्शन। गोपी-तलाई—जहाँ भगवान्ने गोपियोंको अनेक लीलाएँ प्रकट दिखायी हैं। स्फटिकमणिके शालग्रामजी—जिनमें धुनवाड़ेके से दर्शन होते हैं।

* आभूषणवन, निवारणवन और गुञ्जावन—इन तीनों वनोंको यमुनाजीने काट दिया है।

वस्त्रमोचन, कात्यायनीघाट और चीरघाट

यहाँ भगवान्‌के पति होनेके निमित्त कात्यायनीका व्रत गोप-कन्याओंने किया था, पर यमुनाजीमें नंगे होकर स्नान करती थीं, उस दोषको दूर करनेके लिये और उस कुप्रथाको हटानेके लिये और उनकी प्रेमाभक्तिको बढ़ानेके लिये भगवान् उनके वस्त्रोंको घाटपरसे उठाकर कदम्बके ऊपर जा बैठे। फिर उनकी प्रार्थनासे उनके वस्त्र उनको दिये। यहाँ चीरकदम्ब और कात्यायनीदेवीके दर्शन हैं। महाप्रभुजीकी बैठक है, आगे—

नन्दघाट

—है, जहाँ नन्दबाबा नित्य स्नान और सन्ध्या किया करते थे। एक दिन यहाँसे ही वरुणजीका दूत नन्दरायजीको पकड़कर ले गया था और श्रीकृष्ण वरुणलोकमें जाकर नन्दबाबाको लाये थे। यहाँ नन्दबाबाके दर्शन हैं। उसके पास भयगाँव है, नन्दरायको वरुणका दूत जब ले गया तब गोपोंको भय हुआ था, इससे उस स्थानका नाम भयगाँव पड़ गया। उसके पास—

वसईगाँव

—है। यह वसुदेवजीका गाँव है। यहाँ वसुदेवकुण्ड है। उससे आगे—

वत्सवन

—है, जहाँ वत्सविहारी ठाकुरजीका मन्दिर है और महाप्रभुजीकी बैठक, ग्वालमण्डलीका स्थान, ग्वालकुण्ड और हरिबोल-तीर्थ हैं। यहाँ भगवान् बछड़ोंको चराया करते थे। ब्रह्मकुण्ड—जहाँ ब्रह्मा-जीने बछड़े चुराये थे। उसके पास—

रासौलीगाँव

–है । यहाँ दाऊजीके रासमण्डलका चौंतरा है उसके पास सेहगाँव है और उसके पास आटसगाँव है, जहाँ देवी आटस और गोपाल आटस–ये दो गाँव प्रसिद्ध हैं । चीरघाटसे दो मार्ग हैं, एक तो यह ऊपर लिखा जा चुका है, दूसरा यमुना पार होकर सुरभिवन, मुञ्जाटवी, मेघवन, लताओंका दर्शन, मदवन, भाण्डीरवन, श्याम वन, श्यामकुण्ड, श्यामजी और श्रीदामाजीके मन्दिर, मठ, बेलवन । यहाँ महाप्रभुजीकी बैठक है । यहाँसे यमुनाके इस पार वृन्दावन है । अथवा आटसगाँवसे रामताल—जहाँ भगवान्‌ने रामचन्द्रजीका स्वरूप धारण किया । उससे आगे–

नरी-सेमरीगाँव

–है । यहाँ बलदेवजीका मन्दिर है । नरीमें नरीदेवी और किशोरी कुण्ड हैं । सेमरी श्यामगमलीका अपभ्रंश है । नरी, सेमरी–ये दोनों श्रीराधिकाजीकी सेवक सखियाँ हैं और व्रजकी देवी हैं । बड़ी-बड़ी दूरसे भक्तजन नवदुर्गाओंमें पूजन करने जाते हैं । यहाँ नारायणकुण्ड है । इससे आगे–

चौमुहागाँव

–है । यह चतुर्मुखका अपभ्रंश है । बछड़ोंको चुरानेके बाद जब ब्रह्माजी यहाँ आये और भगवान्‌का यथावत् नित्य विहार देखा तब चतुर्मुखसे आश्चर्यचकित होकर भगवान्‌को देखने रहे और प्रणाम करके स्तुति करने लगे । श्रीमद्भागवतमें लिखा है–

स्पृष्ट्वा चतुर्मुकुटकोटिभिरङ्घ्रियुग्म
नत्वा मुदश्रुसुजलैरकृताभिषेकम् ॥
(१० । १३ । ६२)

—यहाँ उस लीलाका निदर्शन है ।

आजही

श्रीकृष्णने जब अघासुरको मारा था और ब्रह्माजी बालक-बछड़ोंको चुराकर ले गये थे तथा एक वर्षके अनन्तर लौटाकर लाये तब बालकोंने व्रजमें जाकर कहा था—

अद्यानेन महाव्यालो यशोदानन्दसूनुना ।
हतोऽविता वयं चास्मादिति बाला व्रजे जगुः ॥
(भाग० १० । १४ । ४८)

—आज ही इस नन्दनन्दनने महासर्प (अघासुर) को मारा और हमें बचाया । वही यह 'आजही' गाँव है । यहाँ यात्रा नहीं जाती । इस गाँवमें ऐसा दृढ़ प्रबन्ध है कि गाय-बैल-बछड़े बेचे नहीं जाते । यदि कोई चोरीसे बेच दे और मालूम हो जाय तो उसे कठोर जातिदण्ड दिया जाता है । यदि ऐसा सर्वत्र हो जावे तो स्वयं गोरक्षा हो जाय ।

जैंत

यहाँ कृष्णकुण्ड है । इसमें एक पत्थरका बना हुआ विशाल सर्प है, जो अघासुरका निदर्शन है ।

छटीकरा

यहाँ सखियोंके छै कुञ्जभवन हैं । राधिकाजीका गुप्तभवन है ।

गरुड़ गोविन्द

जब भगवान्‌ने गोवर्धन पर्वत धारण किया था तब गरुड़जी सेवा करने पधारे थे—ये उस समयके दर्शन हैं। गोविन्दके बारह भुजाएँ हैं और गरुड़पर विराज रहे हैं। ये गरुड़ गोविन्दजी भी वज्रनाभके पधराये हैं, ऐसा यहाँके पुजारी कहते हैं। व्रजवासियोंने एक पहेली बना रखी है—'पाँच हाथके मन्दिरमें बारह हाथके ठाकुरजी' गरुड़ गोविन्दसे एक मार्गसे—

अक्रूरघाट, अक्रूरगाँव

—है (दूसरे मार्गसे ये वृन्दावनसे पीछे आते हैं), जहाँ अक्रूरजीको भगवान्‌ने वृन्दावनसे मथुरा आते समय यमुनाजीमें अपने स्वरूपके दर्शन कराये थे। यहीं ही बृहत्सेन राजाको शान्त ऋषिने यज्ञ कराया था, उसीके वंशज बारहसेनी वैश्य हैं। यहाँ गोपीनाथजीका मन्दिर है। वैशाख शुक्ला नवमीको यहाँ मेला होता है। उसके पास—

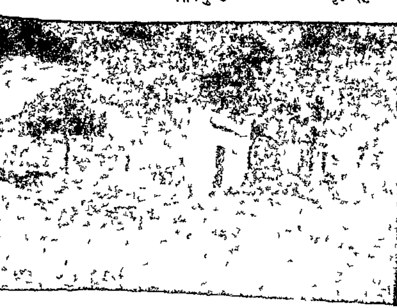
भतरोड

—है, जहाँ यज्ञकर्ता ब्राह्मणोंकी धर्मपत्नियोंने भगवान्‌को और ग्वालबालोंको भोजन कराया था। कार्तिक शुक्ला पूर्णमासीको यहाँ मेला हुआ करता है। कोई कोई मथुरातक यात्रा पूरी करके फिर अक्रूरजीके और भतरोडके दर्शन करते हैं। यही ठीक भी है। भतरोडका स्थान श्रीविष्णुस्वामिसम्प्रदायका है। **मदनटेर** मदनगोपालजीका दर्शन। उससे आगे वृन्दावन है।

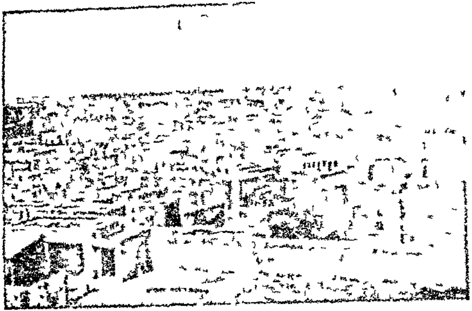


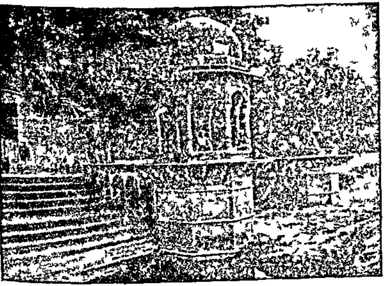
श्याम-कुण्ड

पृ० ६८



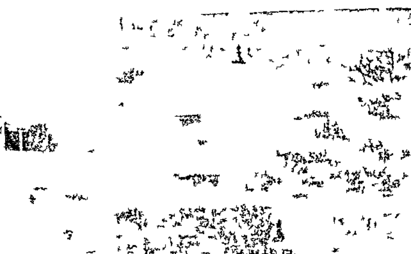
ब्रजकी झाँकी

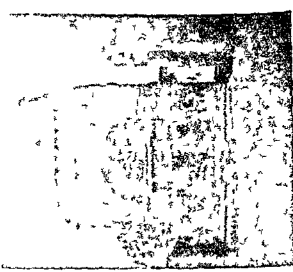


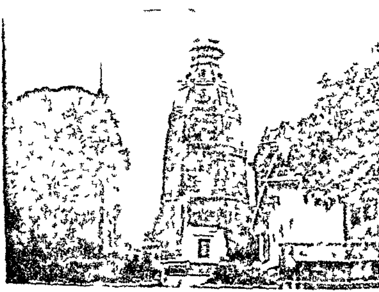


कालीदह (वृन्दावन)

पृ० ७१







मदनमोहनजीका मन्दिर ([illegible])

वृन्दावन (श्रीवन)

कालीदह (कालियहद), जहाँ भगवान्‌ने कालियनागको मर्दन करके यहाँसे निकाला था। वहाँ कालियमर्दन ठाकुरजीके दर्शन हैं।

युगलघाट—यहाँ युगलकिशोरजीका मन्दिर है। इसके पास मदनमोहनजीका मन्दिर है। बंगाली गोस्वामी श्रीसनातनजीको यह मूर्ति मिली थी। इसके सम्बन्धमें यह किंवदन्ती है कि यह श्रीविग्रह मथुरामें किसी चौबेजीके पास था, जिनको सनातनगोस्वामी वृन्दावन ले गये। जिन चौबेजीके पास यह विग्रह था उनको असकुण्डा बाजारमें मदनमोहनजीकी जायदादमेंसे एक दूकान मिली हुई है। जबसे यह मूर्ति करौली पधारी है तबसे करौलीके मदनमोहनजीके मन्दिरसे उन्हीं चौबेजीके वंशजोंको सौ रुपये सालाना अबतक मिल रहे हैं। पर श्रीनरहरि चक्रवर्तीकी बनायी हुई तीन सौ वर्ष की पुरानी बंगला पुस्तक 'भक्तिरत्नाकर' में इस मूर्तिकी प्राप्ति महावनसे बतायी गयी है। किसी रामदास नामक पंजाबी सेठने लाल पत्थरका बहुत सुन्दर मदनमोहनजीका मन्दिर बनवाया था। यवन उत्पीडनके समय ये मदनमोहनजी करौली पधराये गये। उसके पीछे दूसरा मन्दिर बंगाली बाबू नन्दकुमार घोषने बनवाया, उसमें दूसरी मदनमोहनजीकी मूर्ति स्थापित की गयी।

अद्वैतवट—श्रीअद्वैत गोस्वामीजीकी तपोभूमि। अष्ट सखियों-का म[illegible] बहुत सुन्दर दर्शन है।

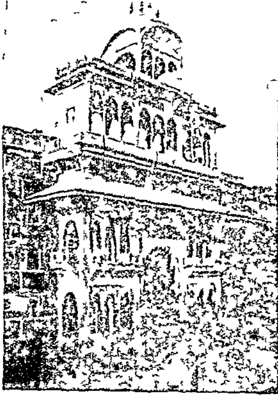
श्रीबाँकेविहारीजीका मन्दिर—ये स्वामी श्रीहरिदासजीके पूज्य देव हैं। बड़ी मनोहर मूर्ति है। यहाँ सब ही बातें विलक्षण हैं। सवेरे दस बजेसे पहले तो आप उठते ही नहीं हैं। दर्शन होतेमें भी क्षण-क्षणमें पर्दा आ जाता है। वर्षदिनमें एक ही दिन अक्षयतृतीयाको चरणोंके दर्शन होते हैं। वर्षभरमें एक ही दिन आश्विन शुक्ला पूर्णमासीको मुकुट और वंशी धारण करते हैं। एक ही दिन श्रावण शुक्ला तृतीयाको हिंडोलेमें झूलते हैं। दूध भात आपका प्रधान भोग है। मन्दिरमें शङ्ख, घण्टा घड़ियाल, मृदङ्ग आदि किसी प्रकारका बाजा नहीं बजता है। स्वामी श्रीहरिदासजी बड़े पहुँचे हुए साधु थे, जिनकी कुटीपर तानसेनका चेला बनकर अकबर बादशाह आया था।

श्रीबाँकेविहारीजीके प्राकट्यके सम्बन्धमें यह प्रसिद्धि है कि श्रीहरिदास स्वामी निधिवनमें भजन-पूजन करते थे, वहीं पृथ्वीके नीचे श्रीबाँकेविहारीजी विराजमान थे और वे श्रीहरिदास स्वामीसे बातें करते थे। एक दिन आज्ञा की कि मुझे पृथ्वीसे निकालकर मेरी विधिवत् सेवा-पूजा करो। स्वामीजीने आज्ञानुसार कार्य किया। इस प्रकार उनका प्राकट्य हुआ, पीछेसे यह मन्दिर बना।

श्रीबाँकेविहारीजीके दर्शन एक साथ देरतक नहीं हो सकते। क्षण क्षणमें पर्दा बदलता रहता है। इसके सम्बन्धमें ऐसी किंवदन्ती है कि श्रीबाँकेविहारीजीकी परम मनोहर और बाँकी झाँकीपर रीझकर एक भक्त बहुत देरतक टकटकी लगाये देखता रहा और श्रीबाँकेविहारीजी उसके प्रेमके वशीभूत होकर



श्रीश्रीराधावल्लभजीकी झाँकी (वृन्दावन)
पृ० ७३





सेवाकुञ्ज (वृन्दावन)

उनके साथ चले गये। पीछे पुजारियोंकी बड़ी विनयपर पधारे। तबसे ऐसा नियम है कि कोई एक साथ बहुत देरतक दर्शन न करने पावे। पर्दा बदलता रहता है। भक्तोंके भाव ही तो हैं, इनमें तर्कको स्थान नहीं। श्रीबाँकेबिहारीजीकी मूर्ति बड़ी ही मनोमोहक और चित्ताकर्षक है।

आगे स्वामी श्रीहितहरिवंशजीके दर्शन, श्रीराधावल्लभजीके दर्शन हैं। ये स्वामी श्रीहरिवंशजीके पूज्य इष्टदेव हैं। स्वामी श्रीहरिवंश भी बड़े प्रतापी महात्मा थे। राधावल्लभजीके भोगमें खिचड़ी नामी वस्तु है।

श्रीराधावल्लभजीके सम्बन्धमें यह बताया जाता है कि गोस्वामी श्रीहितहरिवंशजी देवबंदके रहनेवाले थे। वे देवबंदसे श्रीवृन्दावन आ रहे थे। रास्तेमें वे चटथावल गाँवमें ठहरे। वहाँ एक आत्म देव नामक ब्राह्मणके यहाँ यही श्रीराधावल्लभजीके श्रीविग्रह थे। दर्शन करते ही गोस्वामीजी मुग्ध हो गये। आत्मदेवने यह मूर्ति गोस्वामीजीको भेंट की और अपनी दोनों कन्याओंका पाणिग्रहण संस्कार भी गोस्वामीजीके साथ कर दिया। गोस्वामीजी श्रीराधा-वल्लभजीकी मूर्तिको लेकर श्रीवृन्दावनमें आये और वहाँ संवत् १५६५ में श्रीराधावल्लभजीकी स्थापना की। श्रीहितहरिवंशजी गोस्वामीके तीन पत्नी थीं। दोके वंश चले। आज भी श्रीराधावल्लभजीकी सेवा-पूजा इन्हींके वंशजोंमें है।

[illegible] दानगली, मानगली, यमुनागली, कुञ्जगली, शृङ्गारवट, [illegible]। सेवाकुञ्जमें रंगमहल है, जिसमें श्रीराधा-कृष्णका

विचित्र चित्र पट और शय्याके दर्शन होते हैं । ललिताकुण्ड है ललिताबाग है । श्याम तमालके वृक्ष हैं जिनकी गाँठ गाँठमें शाल ग्रामजीके दर्शन होते हैं । यह श्रीराधा कृष्णके नित्यविहारका स्थल है । यहाँ रात्रिमें कोई नहीं रहने पाता । बदरतक भी जो दिनमें यहाँ असख्य बैठे रहते हैं रातमें यहाँसे चले जाते हैं । यदि कोइ रातमें छिपकर रह जाता है तो सबेरे मरा हुआ या मुमूर्षु मिलता है । यहा अनेक प्रकारके फूलोंकी सुगन्ध आया करती है । यहाँ बहुतोंको भगवान्‌की रासलीलाके प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं । अभीतक जगहकी हा तरह है । थोड़े दिनोंसे एक बगाली ने यहाँ संगमरमरका एक छोटा-सा मन्दिर बनवाया है, उसमें युगल सरकारका सेवा पूजा होती है ।

शृङ्गारवट—यहाँ श्रीराधिकाजीकी बैठक है । श्रीराधिकाजी के चरणचिह्न हैं ।

सवा मनके शालग्रामजीका मन्दिर लोइबाजारमें है । इतने बड़े शालग्रामजी भी और कहीं देखनेमें नहीं आते हैं ।

शाहविहारीलालजीका बनवाया हुआ छोटे राधारमणजीका मन्दिर है, जिसमें संगमरमरके खम्भ, पुतलियाँ और जालीके कटावके काम बड़े सुन्दर हैं । मन्दिर देखने ही योग्य है । सेवा भी बड़े मधुर भावसे होती है । वसन्तपञ्चमीको भगवान् वसन्ती कमरामें विराजते हैं । बड़ी शोभा होती है । श्रीवृन्दावनके दर्शनीय मन्दिरोंमें यह एक ही मन्दिर है ।

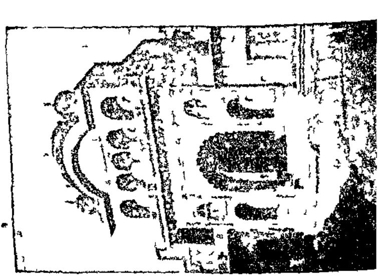
निधिवन—इसीमें स्वामी श्रीहरिदासजी विराजते थे । यहाँ



शाहविहारीलालजीका मन्दिर (वृन्दावन) पृ० ७४

नक्शा आगि



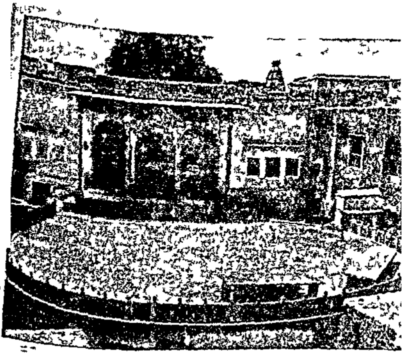


हो श्रीबाँकेबिहारीजी प्रकट हुए हैं, इसीसे इसका नाम निधिवन है। कोई-कोई इसको निधुवन कहते हैं, जो केवल भ्रम है।

श्रीराधारमणजीका मन्दिर—यह श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुकी माध्वगौड़ीय सम्प्रदायका मन्दिर है। ये श्रीराधारमणजी श्रीगोपालभट्टजीके पूज्य इष्टदेव हैं। सुनते हैं कि पहले ये श्रीशालग्रामरूपमें थे। कथा इस प्रकार बतायी जाती है कि श्रीगोपालभट्टजी जब श्रीचैतन्य महाप्रभुकी आज्ञासे श्रीवृन्दावनमें निवास करते थे तभी उन्हें श्रीचैतन्यके अन्तर्धान होनेका समाचार मिला। उसी दुःखमें उन्होंने दक्षिणकी यात्रा की और श्रीगण्डकीजीसे द्वादश शालग्रामकी मूर्तियाँ लाये। उन्हींको पधराकर वे एकान्तमें सेवा पूजा करते थे।

एक दिन किसी सेठने सभी मन्दिरोंके श्रीविग्रहोंकी सेवाके लिये वस्त्र, आभूषण बाँटे। श्रीगोपालभट्टजी श्रीगोविन्दजी, श्रीगोपीनाथजी श्रीमदनमोहनजी आदि विग्रहोंकी सेवा करनेके लिये बुलाये जाते थे। उनकी भी बलवती इच्छा हुई कि इन श्रीविग्रहोंकी भाँति हमारे भी उपास्यदेवके अङ्ग प्रत्यङ्ग होते तो हम भी इन वस्त्राभूषणोंसे प्रभुका शृङ्गार करते। श्रीभगवान् तो भक्तवाञ्छाकल्पतरु हैं। उनके लिये कोई बात असम्भव तो है नहीं, वे तो भक्तकी सच्ची भावना देखते हैं। सच्चे भावसे जो उन्हें जैसे चाहता है वे वैसे ही बन जाते हैं। श्रीगोपालभट्टजीकी इच्छा बलवती हो उठी। उन्हें रात्रिमें नींद नहीं आयी। वे प्रमाश्रु बहाते हुए भगवान्से बार-बार कह रहे थे, मुझे तो मोहिनी ... दर्शन दीजिये, मैं तो प्रभुकी साकार प्रतिमाके

के लिये लालायित हूँ। भक्तभयभञ्जनहारी भगवान्‌ने अपने आर्त भक्तकी प्रार्थना स्वीकार की। ध्यान करते-करते ही भट्टजीको झपकी आ गयी। उसी समय मानो भगवान्‌ने उन्हें जगाया और बोले—'गोपाल! उठ मेरे दर्शन कर!' जल्दीसे हड़बड़ाते हुए भट्टजी उठे और उन्होंने पासमें रक्खी हुई पिटारीको खोला। उसमें जो कुछ देखा उसे देखकर उनकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं रहा। द्वादश शालग्रामोंमेंसे ग्यारह तो ज्यों-के-त्यों रक्खे हैं। एक शालग्राममेंसे एक बड़ी ही सुन्दर भुवनमोहिनी प्रतिमा प्रकट हो गयी है। वह वैशाख शुक्ल १४ की रात्रि थी अतः दूसरे दिन पूर्णिमाको श्रीराधारमणजीके प्राकट्यका बड़ा भारी उत्सव मनाया गया जो अबतक वैशाखी पूर्णिमाको मनाया जाता है। वे शेष ग्यारह शालग्राम अब भी श्रीराधारमणजीकी पूजामें विद्यमान हैं। भट्टजी दाक्षिणात्य ब्राह्मण थे। उनके शिष्य श्रीगोपीनाथजी देववदके गौड़ थे। उन्होंने अपने भाई श्रीदामोदरदासजीको सेवाधिकार देकर उन्हें विवाह कर लेनेकी आज्ञा दी। श्रीराधारमणजीके सेवाधिकारी गोस्वामीगण उन्हीं श्रीदामोदरदासजीके वंशज हैं। श्रीराधारमणजीकी मूर्ति बड़ी ही मोहक है। श्रीशालग्रामशिलाका कुछ अंश अभीतक उनकी पीठमें विद्यमान है। यहाँकी पूजापद्धति बड़ी ही मधुर है। समयसे थोड़ी देरमें पहुँचनेसे भी दर्शन नहीं होते। श्रीवृन्दावनमें तीन ही श्रीविग्रह स्वयं प्रकट और प्राचीन हैं—श्रीहरिदासस्वामीके श्रीबाँकेबिहारीजी, श्रीगोपालभट्टजीके श्रीराधारमणजी और श्रीहितहरिवंशजीके श्रीराधावल्लभजी। तीनों ही मूर्तियाँ परम रम्य और मनोमोहक हैं। इनका



रासमण्डल (।



गोकुलानन्द मन्दिर श्रीराधाविनोदजी (वृन्दावन) पृ० ७७



वंशीवट (वृन्दावन) पृ० ७७

प्रधान भोग मिश्रीकी छोटी-छोटी रवड़ीकी कुल्हियाँ हैं। श्रीराधारमणजी-की रबड़ी और मीठे पुलके मशहूर हैं। इस मन्दिरके पास रासमण्डलका चौतरा है और कई मन्दिर हैं। श्रीगोपालभट्टजी भी बड़े प्रतापी महात्मा थे। उस समय भगवदिच्छासे ही ऐसे-ऐसे प्रभावशाली महात्मा प्रकट हुए थे जिन्होंने भक्तिरसका समुद्र प्रकट कर दिया था।

इसके आगे गोपीनाथजीका मन्दिर है। यह भी श्रीकृष्ण चैतन्यसम्प्रदायका है। परन्तु प्राचीन गोपीनाथजी जयपुर पधार गये हैं। इनके सम्बन्धमें ऐसा सुना जाता है कि कोई बंगाली मधु पण्डित वृन्दावनमें आये और भगवान्‌के दर्शनोंके लिये व्याकुल हुए। भक्तकी व्याकुलतासे व्याकुल होकर भगवान्‌ने वंशीवटके नीचे गोपीनाथरूपसे दर्शन दिये। भक्त प्रसन्न हो गया। उनका पहला मन्दिर राजपूतानानिवासी श्रीरायशीलजीने बनवाया था। और वर्तमान मन्दिर किसी नन्दकुमार बाबूने बनवाया है।

श्रीगोकुलानन्द-मन्दिर (दूसरा नाम श्रीराधाविनोद)—श्रीलोकनाथ गोस्वामी श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके संन्यास लेनेके भी पूर्व उन्हींकी अनुमतिसे वृन्दावन आये थे और उन्होंने श्रीराधा-विनोद भगवान्‌की स्थापना की तथा जीवनपर्यन्त सेवा करते रहे। इसके आगे वंशीवट है। वंशीवटके नीचे खड़े होकर श्रीश्याम-सुन्दर वंशी बजाया करते थे। यहाँ श्रीठाकुरजी और ठकुरानीजीके चरणचिह्न हैं। यहाँ नित्यप्रति रास होता है।

उसके आगे गोकुलनाथजी, गोसाईंजी, दामोदर रसाणीजी और महाप्रभुजीकी बैठकें हैं। नदियादके श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर है।

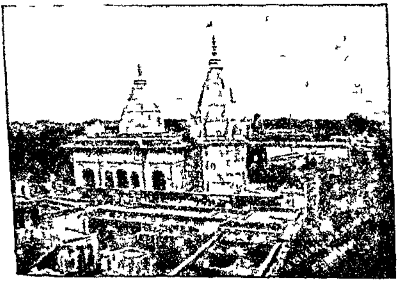
गोपश्वर महादेवजीका मन्दिर—ये महादेवजी भी भगवान् श्रीकृष्णके प्रपौत्र वज्रनाभके पधराये हुए हैं। इनके दर्शनके बिना वृन्दावनकी यात्रा सफल नहीं होती। जिस समय भगवान्‌ने शरद् पूर्णिमाको महारास किया था तब महादेवजीकी भी इच्छा हुई कि हम भी इस लीलाको देखें तब गोपीका रूप धरकर वहाँ पधारे। भगवान् ताड़ गये और बोले—आइये गोपीश्वर ! उसी दिनसे गोपीश्वर या गोपश्वर नामसे विख्यात होकर शिवजी यहाँ बस गये।

श्रीगिरिधारीदास ब्रह्मचारीजीका मन्दिर ग्वालियरके महाराज जीवाजीका बनवाया हुआ है जिसमें श्रीरसगोपाल, सनकादिक, नारदजी और श्रीराधाकृष्णजीके दर्शन हैं। ये ब्रह्मचारीजी भी बड़े सिद्ध थे। इनको वाक्‌सिद्धि थी। बड़े ब्राह्मणभक्त थे। पढ़े लिखे कुछ नहीं थे, केवल भजनका प्रताप था। राजाओंसे साला (साला) कहकर बोलते थे। इन्होंने श्रीवनमें बारह वर्षतक श्रीगोपाल महामन्त्रका अनुष्ठान किया था। उसीसे इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। इनकी सिद्धिके बहुत से चमत्कार प्रसिद्ध हैं, महाराज माधवसिंह इनके ही आशीर्वादसे राजा बने। ये निम्बार्कसम्प्रदायके थे। इनके मन्दिरमें भी सदा रास होता है।

लालाबाबूका मन्दिर—यह भी बड़ा विलक्षण है। इसके शिखरपर चक्रसुदर्शन विराजमान है और शिखर भी बहुत शोभायमान है। लालाबाबू विरक्त बनकर व्रजमें रहे, व्रजवासियोंके घरसे माधुकरी भिक्षा करते थे। परन्तु इन्होंने अपनी बुद्धिसे उस समयमें बहुत-से गाँव और स्थान बहुत थोड़े रुपयोंमें मोल

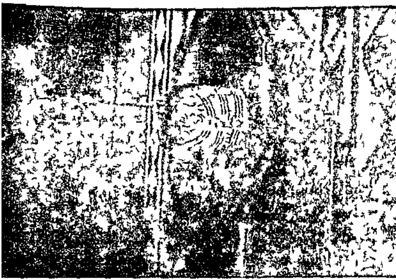
की झाँकी

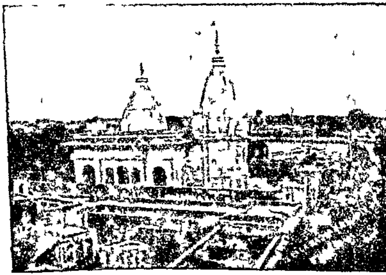


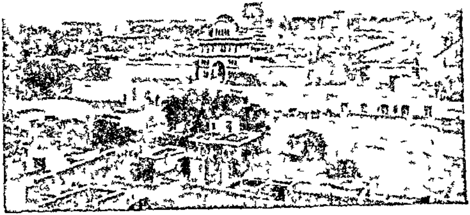


श्रीगिरधारीदास बाबाकी शिखर मन्दिर स्थापितके महाराज कीर्तिदास बाबाका हुआ है जिसमें श्रीहरनारायण, गोपालनन्दनजी और श्रीराधाकृष्णजीके दर्शन हैं। ये महापुरुषोंमें ही बड़े सिद्ध थे। इनकी वाक्सिद्धि थी। बड़े आत्मानन्द थे। पढ़े लिखे कुछ नहीं थे केवल भजनका प्रभाव था। राजाओंमें साला (साले) कहकर बोलते थे। इन्होंने श्रीचरणों बारह वर्षतक गोपाल मन्त्र महामन्त्रका अनुष्ठान किया था। उसीसे इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। इनकी सिद्धिके बहुत-से चमत्कार प्रसिद्ध हैं, महाराज माधवसिंह इनके ही आशीर्वादसे राजा बना। ये निम्बार्कसम्प्रदायके थे। इनके मन्दिरमें भी सदा रास होता है।

लालाबाबूका मन्दिर—यह भी बड़ा विलक्षण है। इसके शिखरपर चक्रसुदर्शन विराजमान है और शिखर भी बहुत शोभायमान है। लालाबाबू विरक्त बनकर व्रजमें रहे, व्रजवासियोंके घरसे माधुकरी भिक्षा करते थे। परन्तु इन्होंने अपनी बुद्धिसे उस समयमें बहुत-से गाँव और स्थान बहुत थोड़े रुपयोंमें मोल







श्रीरंगनाथजीका मन्दिर (वृन्दावन)

ले लिये कि जिनमें प्रसिद्ध व्रजके स्थान हैं। इनकी जरा-सी धरतीपर रंगनाथके मन्दिरका बुर्ज बन गया था, इसपर इन्होंने मुकदमा लड़कर उसका कुछ हिस्सा तुड़वा दिया। ये लालबाबू कलकत्ताके बंगाली कायस्थ थे। व्रजरजके इतने प्रेमी थे कि उन्होंने कह दिया था कि मेरी मृत्युके बाद मेरे शवका विमान न निकाला जाय, व्रजकी गलियोंमें खींचते हुए ले जाया जाय, ऐसा ही किया भी गया। इनका व्रजनिष्ठा अलौकिक थी।

ब्रह्मकुण्ड—इसको ब्रह्महृद भी कहते हैं। भगवान्‌ने एक बार गोपोंको अपना ब्रह्मलोक दिखाया था। श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

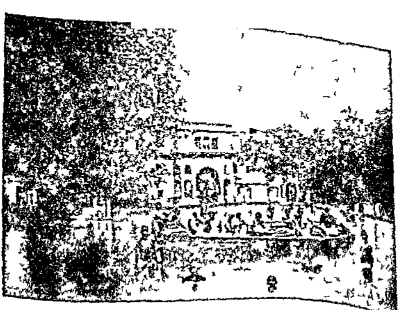
> ते तु ब्रह्महृदं नीता मग्नाः कृष्णेन चोद्धृताः।
> ददृशुर्ब्रह्मणो लोकं यत्राक्रूरोऽध्यगात् पुरा॥
> (१०। २८। १६)

यह ब्रह्मकुण्ड इसी लीलाका द्योतक है।

श्रीरङ्गनाथका मन्दिर—जिसमें बहुत ऊँचा सुवर्णका गरुड़-स्तम्भ है, विशाल पुष्करिणी है, बीसियों त्रिमाळियाँ (रहनेका स्थान) हैं। एक-एक त्रिमाळीमें एक एक कुआँ है। दक्षिणमें जैसा श्रीरङ्गजीका मन्दिर है उसीके आकार-प्रकारका यह मन्दिर है। बहुत ऊँचा शिखर है। पश्चिमका दरवाजा व्रजके दरवाजोंके आकारका-सा है, चार परकोटा हैं। मन्दिरमें श्रीरङ्गनाथजीकी बड़ी विशाल चतुर्भुजी मूर्ति है। चारों ओर मन्दिरोंमें अन्यान्य भगवन्मूर्तियाँ तथा श्री-वैष्णवसम्प्रदायके आळवारोंकी (पूर्वाचार्योंकी) मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर व्रजमें श्रीरामानुजसम्प्रदायकी कीर्तिरूप है। श्रीस्वामी

सबसे ऊँची [illegible] जलता हुआ दीपक दिल्लीमें दीखता था। पर इसका ऊपरका भाग यवनोंने गिरा दिया। यह मन्दिर राजा मानका बनाया हुआ है। यह मन्दिर प्राचीन कारीगरीका एक अद्भुत नमूना है। समूचा मन्दिर लाल पत्थरसे ऐसा बना है कि जोड़ दिखायी ही नहीं देते। इसके ऊपर जो बेलबूटोंकी कटाई है वह भी अद्भुत है। इसके पीछे दूसरा नये गोविन्ददेवजीका मन्दिर है जिसमें गौड़ीय सम्प्रदायके बंगाली वैष्णव सेवा पूजा करते हैं।

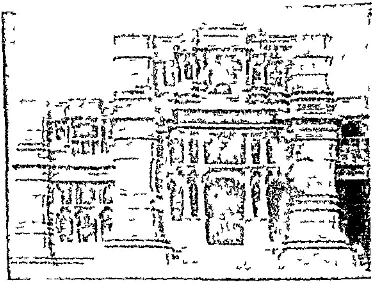
ज्ञान गुदड़ी रङ्गजीके मन्दिरके पूर्वकी ओर यमुना किनारे है। ज्ञान-गुदड़ी, गुदड़ी, हाट, पैंठ बाजारको कहते हैं। यह ज्ञानकी गुदड़ी था। यहाँपर बैठकर प्राचीन महात्मा ज्ञान भक्तिकी चर्चा किया करते थे। अपने-अपने सिद्धान्तोंका, रहस्योंका परस्पर आदान प्रदान किया करते थे। इसमें श्रीविष्णुस्वामि-सम्प्रदायके विरक्तोंका अखाड़ा (मन्दिर) है। मोहनीदासजीका—जो कि स्वामी श्रीहरिदासजीकी शिष्यपरम्परामें थे—मन्दिर है, जो मोनीदासजीकी टट्टीके नामसे प्रसिद्ध है। यहाँकी अरबी (घुइयाँ) और पूरी प्रधान भोग है, यहाँकी बनी घुइयाँ पारसल होकर दूर-दूरतक जाती हैं। बहुत दिनोंतक ज्यों की-त्यों बनी रहती है। उनका भोग केवल राधाष्टमीके दिन लगता है। कहते हैं कि यहाँ स्वामी हरिदासजीके करुआ और कौपीन रक्खे हैं। ज्ञान-गुदड़ीमें और भी कई मन्दिर हैं। जब कभी ज्ञान-गुदड़ीमें यमुनाजी आ जाती हैं तब कड़ा पर मेला लगता है। **यमुनापुलिन,**



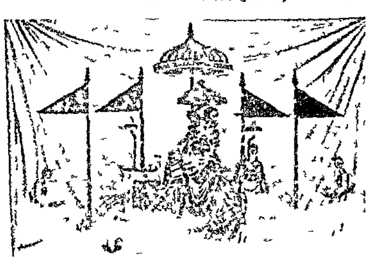
मान-गुदड़ी, यमुना चत्वर (वृन्दावन)

पृ० ५५





श्रीगोविन्ददेवजीका मन्दिर (वृन्दावन) पृ०



[illegible]

ज्ञान-गुदड़ीमें श्रीयमुनाजीका बड़ा रमणीक पुलिन (तट) है। यहाँकी रज (रेती) बड़ी सुन्दर है।

श्रीकिशोरीरमणजीका मन्दिर शहरके भीतर सैयदबाजारमें शाहजहाँपुरवाली रानीका बनवाया हुआ है। यह विष्णुस्वामि-सम्प्रदायके गोस्वामी श्रीवंशीअलिजी (भ्रमर) के वंशके गोस्वामी श्रीलाड़िलीप्रसादजीकी भेंट है।

जयपुरके महाराजका बनवाया हुआ बहुत सुन्दर और विशाल मन्दिर शहरसे बाहर ब्रह्मचारीजीको भेंट किया हुआ है। इसमें जयपुरकी कारीगरीका अच्छा दृश्य है और ब्रह्मचारीजीके मन्दिरके अनुकरणका बना हुआ है, वैसी ही यहाँ मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह भी श्रीनिम्बार्कसम्प्रदायका दर्शनीय विशाल मन्दिर है।

तड़ासके राजा वनमालीरायका बनवाया हुआ मन्दिर इसके सामने है। राजासाहब भगवान्‌से जमाई बाबूका सम्बन्ध रखते थे। इस मन्दिरमें ठाकुरजीको हुक्केका भी भोग लगाया जाता है।

बस, प्रसिद्ध मन्दिर ये ही हैं और छोटे मन्दिर तो हजारों हैं, इसीसे कहते हैं कि 'वृन्दावनमें मन्दिर और बंदर हैं।' किसी भक्तने कहा है कि—

बिंदरावनमें बँदरा घन। भजन करत हैं साधूजन ॥

इसमें बहुत से भजनानन्दी महात्मा छिपे हुए भजन करते हैं। विद्वान् भी यहाँ बहुत-से हैं। धर्मशाला, कुञ्ज, घाट बड़े सुन्दर बने हुए हैं और बहुत से हैं। म्युनिसिपाल्टी, कोतवाली, सफाखाना, डाकखाना रामकृष्ण सेवाश्रम, भजनाश्रम, स्कूल,

मन्दिर और यमुना किनारे बड़के पेड़के नीचे हनुमान्‌जी हैं। इससे आगे–

भाण्डीरवन

–है, जहाँ भाण्डीरवट है, भाण्डीरकूप है, यह बहुत पवित्र तीर्थ है। वत्सासुरको मारकर भगवान्‌ने इस पवित्र कूपको प्रकट किया था और इसमें स्नान किया था। यहाँ दाऊजी और श्रीकृष्णका मन्दिर है। यहींपर ही बलदेवजीने प्रलम्बासुरको मारा था। ब्रह्मवैवर्तपुराण और गर्गसंहिताके अनुसार ब्रह्माजीने श्रीराधा-कृष्णका विवाह यहाँ ही कराया है। पहले जहाँ विवाहका उल्लेख किया गया है, वहाँ केवल किंवदन्ती है, कोई आर्ष प्रमाण नहीं मिला। यहाँ भगवान्‌के मुकुटका दर्शन है।

माँटगाँव

जहाँ भगवान्‌ने दही और माखनके मॉट बखेरे तथा फोड़े हैं और फिर यशोदाजीके डरसे भागे हैं तथा उपवनमें जाकर छिपे हैं, तब यशोदाजीने ढूँढ़ते ढूँढ़ते कहा है—

नीत यदि नवनीत नीत नीत किमेतेन।
आतपतापितभूमौ माधव मा धाव मा धाव॥

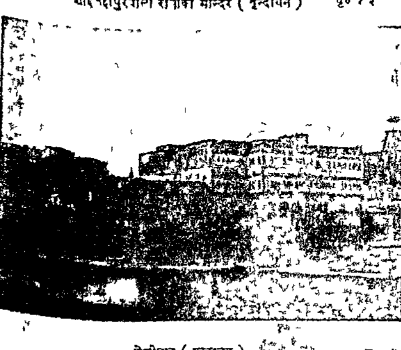
यहींपर जीवगोस्वामीजीने भजन किया था। दाऊजीका मन्दिर है। यह मथुरा जिलेका तहसील है। उससे आगे—

बेलवन

—है, यहाँ श्रीलक्ष्मीजीका मन्दिर है, श्रीरामानुजसम्प्रदायके पूर्वाचार्यों-



शाहजहाँपुरवाली रानीका मन्दिर (वृन्दावन)   पृ० ८२

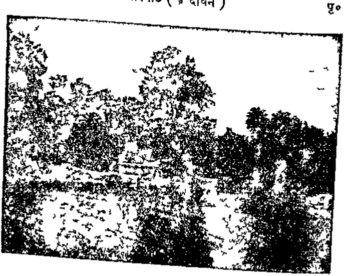


केशीघाट (वृन्दावन)   पृ० ८४



चीरघाट (वृन्दावन)

पृ०



मानसरोवर

की यहाँ मगलाशासन है । महाप्रभुजीकी बैठक है । बेलवनसे वृन्दावन, जैसा कि आगे कह आये हैं । पुन वृन्दावनसे—

खेलनवन

—जहाँ कि राधा-कृष्ण खेले (क्रीडा किये) हैं, उसमे आगे—

मानसरोवर

—(मानका स्थान)—यहाँ किसी समय भगवान्‌ने मान किया था, फिर गोपियोंने बहुत ही विनती करके आपको मनाया था । यह सरोवर बहुत सुन्दर है । यहाँ राधा-कृष्णजीके दर्शन और दो बैठकें हैं ।

राया

यहाँ नन्दरायजीका खजाना रहता था ।

लोहवन

यहाँ कृष्णकुण्ड, लोहासुरकी गुफा और गोपीनाथजीका दर्शन है । यहाँ भगवान्‌ने लोहासुरको मारा है, सनकादिकोंने तप किया है । यहाँ ही—

बृहद्वन

—है, जो कई कोसके बीचमें था, वर्तमान महावन उसका भाग था, पर अब उस बृहद्वनका थोड़ा-सा अश पूर्व बाकी है । दुर्वासा-आश्रम यहाँसे मीलभर दूर दुर्वासा-आश्रम हसगंजमें है । माघमें मेला होता है । प्रतिदिन प्रात बजे यहाँ शखनाद होता है, जिसकी ध्वनि सारी

देती है और धार्मिक लोगोंको ब्राह्ममुहूर्तमें जगनेकी प्रेरणा करती है। इसमें कोई जीविका नहीं है, यथाकथञ्चित् महन्तजी सेवा-पूजाका निर्वाह कर लेते हैं। लोहवनसे कुछ दूर पूर्वकी ओर नीमगाँव है, जहाँ निम्बार्काचार्य प्रकट हुए थे। ऐसी प्रसिद्धि है। लोहवनसे आगे दक्षिणकी ओर—

आनन्दी-वन्दीदेवी

—हैं। ये दोनों दासियाँ श्रीनन्दरायके यहाँ गोबर थापा करती थीं और इसी बहाने नित्य श्रीकृष्ण और बलदेवजीके दर्शन किया करती थीं। यहाँ नन्दी आनन्दीकुण्ड है। आनन्दी-वन्दीसे आगे रीढ़ा-गाँव है। अब चलते—

बलदेवगाँव

—चला करते हैं। यहाँ श्रीबलदेवजी विराजते हैं। श्याम-मूर्ति है, बड़ी मनोहर है, इनके सामने कोनेमें रेवतीजी विराजती हैं। ब्रजमें कई स्थानोंमें गोरेदाऊजी भी हैं। श्रीबलदेवजीका प्रधान भोग माखन मिश्री है। यहाँ क्षीरसागर है। क्षीरसागरके पण्डा सनाढ्य हैं और बलदेवजीके पुजारी अहिवासी हैं। ये बलदेवजी वज्रनाभके पधराये हुए हैं। न जाने कैसे काल-महिमासे बहुत दिनतक ये क्षीरसागरमें शयन करते रहे। इसीसे इसका नाम क्षीरसागर है। इसमें स्नान, दान करनेका बहुत पुण्य है। किसी समय ग्राउस साहबके लेखानुसार जगन्नाथदास साधुको और वर्तमान अहिवासियोंके कथनानुसार कल्याणजी अहिवासीको

दिया कि 'मैं क्षीरसागरमें शयन कर रहा हूँ, मुझे निकाल



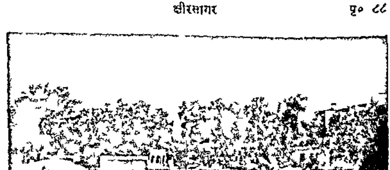
श्रीबलदेवजीकी झाँकी

पृ० ८८

...जकी झाँकी



क्षीरसागर पृ० ८८



थे। तब उन्होंने निकालकर एक कच्चे मन्दिरमें विराजमान कर दिया। ऐसी किंवदन्ती है कि श्रीक्षीरसागरसे बलदेवजी निकालकर एक कच्चे मन्दिरमें पधराये गये और उनकी सेवा-पूजाका भार श्रीकल्याणजीको सुपुर्द किया गया। उन दिनों व्रज-मण्डलमें गोकुलके गोस्वामियोंका प्राधान्य था। यह मन्दिर भी उन्हींके अधीन हुआ। गुसाईंजीकी ओरसे कल्याणजीको कुछ मासिक मिलता था और दाऊजीके शृङ्गारके लिये सब ऋतुओंके वस्त्र मिलते थे। तब मन्दिरकी इतनी महिमा नहीं थी। व्रजके ही कुछ दर्शनार्थी आते थे। कल्याणजीके पास एक कम्बल था, उसीमें वे गुड़मुड़ी मारे पड़े रहते थे। श्रीबलदेवजीकी मूर्ति मनुष्यकी लंबाईसे भी कुछ बड़ी है। इतनी बड़ी विशाल मूर्ति व्रजमण्डलमें दूसरी नहीं है। गोस्वामीजीकी ओरसे दाऊजीके लिये जाड़ोंमें रूईदार रजाई मिलती थी। अपने पुजारीको कम्बल में पड़ा देखकर बलदेवजी स्वयं उन्हें अपनी रजाई उढ़ा देते थे। प्रातःकाल कल्याणजी उन्हें भगवान‍्के वस्त्रोंमें रख देते थे।

किसीने यह बात गोस्वामी गोकुलनाथजी महाराजसे कह दी। गोस्वामीजी एक दिन रात्रिमें बारह बजे रथपर चढ़कर गोकुलसे दाऊजी आये। बलदेवजीने कल्याणजीको जगाकर कहा—'कल्याण! उठ, गुसाईंजी आ रहे हैं, मेरी रजाई मुझे उढ़ा दे और तू कम्बल ओढ़कर सो जा।' कल्याणजीने ऐसा ही किया। गुसाईंजीने किवाड़ें खुलवायीं तो देखा कल्याणजी कम्बल ओढ़े पड़े हैं। गोस्वामीजीने पूछा—'कल्याणराय! सच-सच बताओ क्या बात है?' जो बात थी वह कल्याणजीने सच-सच

पटक दी। तब प्रसन्न होकर गुसाईंजी बोले—'आजसे दाऊजी तुम्हारे ही हुए, तुम जैसे चाहो सेवा-पूजा करो।' बस फिर क्या था धीरे धीरे बलदेवजीकी महिमा बढ़ने लगी। दूर-दूरसे दर्शनार्थी आने लगे। मन्दिर भी विशाल बन गया। औरंगजेब जब सब मन्दिरोंको तोड़ता हुआ दाऊजीमें पहुँचा तो मन्दिरमेंसे असंख्यों भौंरे निकलकर औरंगजेबकी सेनापर टूट पड़े। इससे सम्पूर्ण सेना जान बचाकर भागी। औरंगजेब इस आश्चर्यको देखकर चकित रह गया। तब उसने प्रसन्न होकर पाँच गाँव श्रीबलदेवजीकी सेवाके लिये लगा दिये। वे पाँच गाँव कल्याणजीके वंशज श्रीदाऊजीके सेवाधिकारी पण्डोंपर अभीतक विद्यमान हैं। पीछेसे जब मथुरापर मराठोंका अधिकार हुआ तो सेंधियाने उन पाँच गाँवोंको तो ज्यों-का-त्यों रखा ही, अढ़ाई गाँव और लगाये। इस प्रकार साढ़े सात गाँव लगे हैं। कुछ दिन अंग्रेजी राज्यके आरम्भमें वे जब्त हुए थे। फिर महारानी विक्टोरियाके आदेशसे छूट गये। सरकारी खजानेसे भी तीन रुपया रोज मिलते थे। वे अब बंद हो गये। दाऊजीके पण्डे श्रीवल्लभसम्प्रदायके हैं। अब भी जब गोकुलके गोस्वामी स्वरूप पधारते हैं तो वे स्वयं श्रीदाऊजीका भोग धराते हैं। इसीसे बलदेवजी ब्रजमें विराज रहे हैं। किसीका कहना यह है कि मथुरामें श्रीकेशवकाश्मीरजी और श्रीकील्हस्वामीजीने औरंगजेबको कई चमत्कार दिखलाये थे। उनसे ही मुग्ध होकर फिर शेष ब्रजमें वह गया ही नहीं। इससे पारके तीर्थ उसके अत्याचारसे बच गये। अस्तु।

"दाऊजी तो गोरे थे, यह मूर्ति श्याम क्यों है ?" इसका

उत्तर कोई तो यह देते हैं कि श्याम मूर्तिमें सौन्दर्य अधिक होता है इससे श्याम मूर्ति है । कोई कहते हैं श्रीकृष्णने एक बार अपना तेज बलदेवजीमें आविष्ट किया था । उस समयकी भावनासे दाऊजीमें श्यामता आ गयी और उस समयका निदर्शन यह श्याम मूर्ति है । श्रीमद्भागवतमें लिखा है—

'स्वयं विश्रमयत्यार्यं पादसंवाहनादिभिः ॥'
(१०।१५।१४)

भगवान् आप ही पैर दाबकर बलदेवजीके परिश्रमको दूर करते हैं । और भी भगवान् बलदेवजीसे कहते हैं—

अहो अमी देववरामरार्चितं
पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मन-
स्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥
(श्रीमद्भा० १०।१५।५)

इसमें और आगेके वर्णनमें दाऊजीमें वृक्ष, भौंरे, मोर, हिरनी इनकी भक्तिकी सूचना करके अन्तमें—

धन्येयमद्य धरणी तृणवीरुधस्त्व-
त्पादस्पृशो द्रुमलताः करजाभिमृष्टाः ।
नद्योऽद्रयः खगमृगाः सदयावलोकै-
र्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥
(श्रीमद्भा० १०

—इससे अपनी और दाऊजीकी एकता करते हुए उनमें निज तेज स्थापित किया है। यही दाऊजीकी मूर्तिमें श्यामताका कारण है। इस तेजके स्थापन होनेसे ही आगे दाऊजीने धेनुकासुर, प्रलम्बासुर आदिको मारा है। इससे पहले दाऊजीकी इस प्रकारकी कोई लीला देखनेमें नहीं आयी है। श्रीबलदेवजीमें देवछठ (भाद० शु० ६) और मार्गशीर्षमें (पूर्णिमाको) बड़े भारी मेले होते हैं। बलदेवजीसे पाँच कोस उत्तरकी तरफ दिव्यपति गोपके रहनेका—

देवनगर

—स्थान है। यहाँपर रामसागर कुण्ड और उसके पास बहुत प्राचीन बहुत बड़ा एक कदम्बका वृक्ष है और दिव्यपति गोपके पूजनेका गोवर्धन-पर्वत भी वहाँ अबतक वर्तमान है। बल्देवगाँवके पास हतोड़ागाँव है, वहाँ श्रीनन्दरायकी अथाई (बैठक) है।

ब्रह्माण्डघाट

'श्रीकृष्णने मृत्तिका खायी है' इस बातको सुनकर यशोदाजीने जब आपको धमकाया, तब आपने मुख खोल दिया और मुखमें श्रीयशोदारानीको ब्रह्माण्ड दिखा दिया। यह कथा श्रीमद्भागवतमें ही है। श्रीशङ्कराचार्यने इसका इस प्रकार वर्णन किया है—

मृत्स्नामत्सीहेति यशोदाताडनशैशवसन्त्रास
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालम्।

(श्रीगोविन्दाष्टकात्)

उसी लीलाका निदर्शन ब्रह्माण्डघाट है। यहाँ बालकृष्ण भगवान्‌के दर्शन हैं। ठीक यमुना किनारे बड़ा ही सुन्दर स्थान है। पक्का घाट

है। महावनसे पक्की सड़क भी गयी है। यहाँ प्रसादमें मिट्टी ही मिलती है। ब्रह्माण्डघाटसे यमुना पार (मथुराकी ओर)—

कोलेघाट, कोलेगाँव

—है। ऐसी किंवदन्ती है कि जब वसुदेवजी श्रीकृष्णको लेकर महावन जाने लगे तब मार्गमें यमुनाजी मिलीं वसुदेवजी धैर्य धारण कर यमुनाजीमें होकर ही चल दिये। जब गलेतक जलमें पहुँच गये और बह जानेकी-सी सम्भावना हुई तब बालककी चिन्तासे घबड़ाकर बोले कोले (इसे कोन लेवे) इसीसे यहाँ कोले नामका घाट और कोलेगाँव बस गया। इसके अनुसार वसुदेवजी वर्तमान मथुरासे दो कोस दक्षिण कोलेघाटकी जगहसे महावन गये थे ऐसा प्रतीत होता है। यहाँसे कुछ आगे—

कर्णावल

—है जहाँ भगवान्‌के कर्ण छिदे हैं।

लोचन भरि गये दोउ मातनके कन छेदत देखत सुरकी।
रोवत देखि जननि अकुलानी लियो तुरत नौआसू घुरकी॥

—सूरदास

यहाँ कर्णवेधकूप और रत्नचौक है। मदनमोहनजी, माधवराय-जीके मन्दिर हैं। कुछ हटकर मथुरेशजीका प्राकट्य स्थान है। यह एकान्तमें तप करनेयोग्य भूमि है। ये मथुरेशजी कोटामें विराजते हैं। फिर यमुना पार करके—

महावन

—है, यहाँ ही पहले नन्दजी रहा करते थे। यहाँ ही वसुदेवजी मथुरा से श्रीकृष्णको लाये थे। यहाँ चिन्ताहरण, यमलार्जुनभङ्ग, बछड़ा

चरानेका स्थान नन्दराजका दौनन (दाऊवन) कन्नका टीला, नन्दकूप, पूतनाखार शकटासुरभञ्ज, तृणावर्तभग्न, नन्दभवन, दधिमथनका स्थान मगनारे छठीपालना चौरासी खम्भोंका मन्दिर इसमें दाऊजीकी मूर्ति विराजती है। मथुरानाथ, द्वारकानाथ और श्यामलाके मन्दिर गायोंका खिड़क, गोबरके टीले दाऊजीकी और कृष्णजीकी रमणरेती जहाँ दोनों भाई ब्रजकी कीचमें घुटुरन चले हैं। गोपकूप नारदटीला जहाँ नारदजीने तप किया है। इनमें बहुत से स्थान नवीन हैं। आधे महावनमें मुसलमान बसते हैं, आधेमें हिन्दू। महावनसे आगे

गोकुल

—जहाँ नन्दरायका गायोंका खिड़क है। ठकुरानीघाट है, यहाँ महाप्रभुजीने श्रीमद्भागवतके कई पारायण किये हैं। श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथजीने भी कई पारायण किये हैं। इसीसे तीनोंकी बैठकें हैं। गोकुलनाथजी तो प्रायः गोकुलमें ही विराजते थे। आपने औरंगजेब बादशाहको अनेक चमत्कार दिखाकर धर्मकी और हिन्दुओंकी रक्षा की था। (इनके ठाकुरजीका नाम श्रीगोकुलनाथजी ही है।) इसीसे गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज रहे हैं, और सब स्वरूप उस यवनोत्पीडनके समयमें अन्य देशोंमें चले गये हैं, जो क्रमसे १ मथुरेशजी कोटाको, २ विट्ठलनाथजी नाथद्वाराको, ३ द्वारकाधीशजी काँकरोलीको (उदयपुरनरेश इसी गद्दीके शिष्य हैं), ४ गोकुलनाथजी गोकुलमें ही विराज रहे हैं, ५ गोकुलचन्द्रमाजी कामवनको (भरतपुरनरेश इसी गद्दीके शिष्य हैं), ६ बालकृष्णजी सूरतको (गोकुलमें इनका

और मन्दिर नहीं है । इस उठी गद्दीके सम्बन्धमें मतभद भी है), मदनमोहनजी कामवनको । एक श्रीराजाठाकुरका मन्दिर है, इनकी जमींदारी गोकुलमें है और प्रबन्ध श्रीनाथद्वाराके अधिकारमें है । इनके अतिरिक्त और भी कई मन्दिर हैं जिनकी संख्या सब मिलाकर चौबीस है । गोकुलमें रहनेसे ही वल्लभ-कुलके गोस्वामी गोकुलिया गोसाईं कहलाते हैं । गोकुलमें दो-एक विद्वान् भी अच्छे हैं । यहाँपर गुजराती सेठोंका स्थापित दो पाठशालाएँ हैं, जिनमें विद्यार्थियोंको भोजन भी मिलता है । यहाँ ही श्रीविट्ठलनाथसे छीतस्वामी मिले हैं और इनके चमत्कारको देखकर सर्वप्रथम यह पद कहा है—'भई अब गिरधर सों पहिचान' । ये छीतस्वामी अष्टछापके एक रत्न हैं । मथुराके चतुर्वेदी हैं । इनके वंशधर मथुरामें विद्यमान हैं ।

रावल

जहाँ राधाघाट और श्रीलाडिलीजीके दर्शन हैं । यह श्रीराधाजीका ननिहाल है, यहाँ ही श्रीराधाजीका जन्म हुआ था । यहाँ सेवा-पूजा श्रीवल्लभसम्प्रदायानुसार होती है । मन्दिरकी अवस्था वर्तमान समयमें शोचनीय है । स्थान बड़ा ही रमणीक है किन्तु बेमरम्मत पड़ा है । यहाँसे यमुनाजीको पार कर मथुरा आते हैं, गोकुलसे भी मथुरा आ जाते हैं । रावलसे लोहवन, इंसगंज होकर भी मथुरा आनेका क्रम है । बस, यह व्रजभूमिका संक्षिप्त परिचय है ।

कुछ अन्य आवश्यक बातें

कुछ अन्य आवश्यक बातोंका वर्णन करके अब यह लेख समाप्त किया जाता है। कारण, ब्रजमें इतने पावन स्थान हैं और उनके साथ ऐसे इतिहास लगे हुए हैं जिनका सविस्तर वर्णन करनेसे एक बृहद् ग्रन्थ तैयार हो सकता है। अकेले वृन्दावनमें ही ५००० मन्दिर बतलाये जाते हैं। ब्रजमण्डलकी बड़ी महिमा मानी जाती है और वास्तवमें 'तीन लोकतें मथुरा न्यारी' की बात यहाँ कुछ-कुछ देखनेमें आती है।

ब्रजभूमिमें मसजिदें

यों तो ब्रजमें मसजिद तथा गिरजाका भी प्रवेश हो गया है, परन्तु फिर भी हिंदू-संस्कृतिका यहाँ साम्राज्य है। और जो मसजिदें बनीं उनके साथमें भी अलग-अलग इतिहास है, जो हिंदुओंकी उदारता या घोर उदासीनताको प्रकट करता है। उदाहरणार्थ—मथुरामें दो मसजिदें प्राचीन, प्रसिद्ध और विशाल हैं। एक तो केशवदेवजीके मन्दिरको तोड़कर औरंगजेबद्वारा बनवायी गयी और दूसरी चौक-बाजारमें अब्दुलनबी खाँकी बनवायी हुई। यह मसजिद सन् १६६२ ईस्वीमें बनी बतलायी जाती है। और इसका इतिहास भी यह सुना जाता है कि जहाँ यह मसजिद है वहाँ पहले बस्ती नहीं थी, कुछ कसाइयोंकी झोपड़ियाँ थीं। अब्दुलनबी खाँने, जो नवमुस्लिम फकीर थे,

मुसलमानोंको तो यह जँचा दिया कि देखो, मथुरामें तुम्हारी मसजिद बन जायगी और हिन्दुओंको यह समझाकर राजी कर लिया कि देखो, यह मसजिद बननेसे यहाँसे कसाई हट जायँगे और यह रहेगी भी मथुराके बाहर। इस प्रकार नबी खाँने मसजिद बनवायी और फिर चार ब्राह्मणोंको इसमें घण्टा बजानेके लिये नियुक्त कर दिया। मसजिदके पास दूकानें भी बनवायीं जिनमेंसे आठ दूकानका किराया उन चार ब्राह्मणोंको जीविकार्थ मिलनेकी व्यवस्था कर दी। * कुछ ब्राह्मण वहाँ दुर्गापाठ, विष्णुसहस्रनाम तथा गोपालसहस्रनामका पाठ किया करते थे, उन्हें भी एक दूकान सौंप दी। इस प्रकार मसजिद बनकर भी इसपर अधिकार हिन्दुओंका ही रहा। एक मुल्ला भी वहाँ रहता था, पर उसे भी हिन्दू ही नियुक्त करते थे। पर इधर आकर हिन्दुओंने मूर्खतावश अपना अधिकार छोड़ दिया। अपनी दूकानें मुसलमानोंको बेच दीं, और तबसे यह मसजिद सच्ची मसजिद हो गयी। मथुरामें एक बार पेशवाकी सवारी आयी थी। उन्हें यहाँ यह मसजिद देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने तुरत इसे तोड़ देनेका हुक्म दे दिया, पर हिन्दुओंने ही खुशामद कर-कराकर इसे टूटनेसे बचा लिया। अस्तु!

---

* इन घण्टा बजानेवाले ब्राह्मणोंमेंसे एक ब्राह्मणका वंश अबतक मथुरामें विद्यमान है और घण्टापाँड़के नामसे प्रसिद्ध है।—लेखक

व्रजभूमिमें गोवध

हिन्दुस्थानमें गोरक्षाका प्रश्न एक बड़ा विकट प्रश्न है। गोभक्त हिन्दुओंको छातीपर पत्थर रखकर गोवध नाम सुनना तथा गोवध कार्य होने देनेके लिये विवश होना पड़ता है। यहाँ व्रजमें भी गोवध होता है, यह कैसे परितापका विषय है। पर गोप्रेमी हिन्दुओंको यह जानकर परम सन्तोष होगा कि यहाँका गोवध बंद कराना हिन्दुओंके लिये उतना कठिन नहीं है जितना अन्य स्थानोंका। कारण, यहाँ जो गोवध होता है वह सरकारी निषेधाज्ञा की अवहेलना करके होता है। भरतपुरविजेता लार्ड लेक इस व्रजभूमिकी पवित्रतासे बहुत अधिक प्रभावित हुए थे और उन्होंने फरमान निकालकर कभी गोवध न करनेकी आज्ञा जारी की थी। यही नहीं, उन्होंने तो इस भूमिमें शिकारतक खेलनेकी मनाही कर दी थी और अबतक भी वही मनाही चली आ रही है। मथुरा और वृन्दावनके बीचमें यत्र-तत्र उनके उस फरमानके शिलालेख गड़े हुए हैं। बीचमें इस निषेधाज्ञाकी अवहेलना होते देखकर पुन फरमान जारी किये जा चुके हैं। दुबारा हिदायतका एक फरमान सन् १८६६ में जारी किया हुआ इधर-उधर गड़ा मिलता है। गोवध सम्बन्धी फरमानका पालन नहीं हो रहा है, इसलिये हिन्दुओंका परम कर्तव्य है कि वह चेष्टा करके गोवध बंद करानेका प्रयत्न करें। एक बार प्रयत्न किया जा चुका है, पर इस बार ऐसा सामूहिक

उद्योग करनेकी आवश्यकता है जो सफल होकर ही रहे। इस ओर हिन्दुओंको शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देना चाहिये तथा धारा-सभा और प्रान्तीय सभाओंमें इस सम्बन्धके प्रश्न पूछे जाने चाहिये। सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये कर्नल लेककी निषधाज्ञाका सरकारी हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है—

लेक (सही अंग्रेजीमें)

'मथुराजीकी भूमि हिन्दुओंकी पवित्र पूजा भक्ति करनेकी जगह है, इस जमीनके ऊपर किसी तरहसे गायोंके लिये किसी प्रकारकी तकलीफ और हानि पहुँचानेकी सब लोगोंको मनायी करनेमें आती है। उन गायोंकी तरफ सब लोगोंको दया और उदारताका बर्ताव करना चाहिये। उसी मथुराजीकी भूमिमें बड़ा भारी प्रसिद्ध पुरुष, बड़ी खिताबोंका पानेवाला, बड़ा शूरवीर इस जमीनपर राज्यशासन जमानेवाला, सब राजाओंके ऊपर राज्य करनेवाला, बहादुर सेनापति लार्ड लेक बहादुर सम्राममें जीतनेवाला सेनापति, जिसके हृदयमें परमेश्वरने दया और उदारताका अंश स्थापन किया है, वह इस हुक्मनामाको बाहर निकालता है कि कसाईकी जाति कोई मानस अथवा दूसरा कोई मथुरा शहरका रहनेवाला होय अथवा लश्कर (पल्टन) का सिपाही (गोरा) अथवा मुसाफिर होय वह कोई सदरमें, शहरमें अथवा उसके पासवाली फौजकी छावनीमें अथवा मथुरा शहरके पड़ावोंमें गायका कतल नहीं करै, इस बाबदमें यह जाहिर किया जाता है कि कोई भी मानस इस जमीनमें गायोंको न काटे, यदि कोई

इस अपराधको करेगा तो उसका कसूरपर निश्चय की हुई सजा दी जायगी और यह कसूर किसी तरह माफ़ नहीं किया जायगा। लिखी आजकी तारीख ३ जुलाई १८०५ ईस्वी रबीउलअव्वल महीनाकी तारीख ५ सन १२२० हिजरी।'

यह सच्ची कॉपी फोटोग्राफ (असली अंग्रेजीमें)

रुस्तम मेहरवान आगा,

पारसीआन आरसिम एण्ड हिन्दुस्तानी

ट्रान्सलेटर हाइकोर्ट, बम्बई।

मथुरा वृन्दावनके बीचमें शिकार खेलनेकी मनाही

स्टेशनकी आज्ञा

मार्फत करनेल डब्लू एच सिमोर साहेब कमेण्डिं अर्थात् सरदार मथुराका ७ मार्च सन् १८६६ मथुरा और वृन्दावन-वासी लोकमहामहिम कमेण्डर इनचीफ अर्थात् सिपहसालारका हजूरमें अर्जी गुजराये हैं। इस मजमूनके लशकरी गोरा और दूसरा अधगोरालोग उस मुकामोंके नगीच मनेका हुक्म रहते भी अबतक शिकार खेलते हैं, इसलिये करनल सिमर साहब फरमाते हैं कि यह साफ समझना चाहिये जो कोई यह काम करेगा उसको साहेब भारी सजा देनेमें कसर नहीं करेंगे। मथुरा और वृन्दावनके बीच यमुनाका दोनों किनारा हिन्दुओंके समीप पवित्र बराबर हैं, इस कारण निश्चय निषेध हुआ कि कोई उन मुकामोंमें या उनके बीच वा नगीच गोली न चलावे। सन् १८६६ अंग्रेजी २४ फरवरी ६ नवम्बरका हुकुम मुताबिक मौजा गोकुल और गिर्द उसका अंदाज डेढ़ मील नौरंगाबादसे और यमुनाके दोनों किनारों निषिद्ध स्थान मुनसल्ला है, उस स्थानमें लशकरीलोक शिकार नहीं खेलेगा मुताबिक हुकुम अलिन रडीमलेपड्न साहेब स्टेशन स्टाफ मथुरा।

आवश्यक सूचनाएँ —

(१) यमुनाजीका धाराप्रवाह—मथुरामें विश्रान्तघाटसे जिसका माहात्म्य-वर्णन ऊपर किया जा चुका है, यमुनाजी

दिन दिन दूरातिदूर पहुँचती जाती हैं। मथुरावासियोंका तथा यात्रियोंका परम धर्म है कि वे उद्योग करके उन्हें घाटपर ले आवें और वह सदा उस घाटपर तथा अन्य घाटोंपर, जिनपर अबतक वे हैं, बनी रहें। यदि ऐसा उद्योग न किया गया तो मथुराकी सारी शोभा नष्ट हो जायगी।

(२) गोचरभूमि—मथुरा वृन्दावनके बीचमें गोचरभूमिके लिये स्वर्गीय बाबू हासानन्दजी वर्माने धनी-मानी उदार गोभक्तोंसे चन्दा करके कई हजार रुपये इकट्ठे किये थे। उनका परलोकवास होनेके उपरान्त एक ट्रस्ट बना। उसने मथुरा वृन्दावनके बीचमें 'धारेरा' गाँवकी दो तिहाई भूमि खरीद ली है, जिसमें व्रजकी गायें मुफ्त चरती हैं।

मथुरासे कुछ तीर्थस्थानोकी दूरी तथा सवारी

		मील				
मथुरासे	वृन्दावन	६		रेल	मोटर	तागा
,,	गरुड़ गोविन्द	४		०	,,	,,
,,	गोकुल	४		०	,,	,,
,,	महावन	५	कच्चे पुलसे	०	०	,
,,	,,	७	पक्के पुलसे	०	,,	,,
,,	बलदेव	१०	कच्चे पुलसे	०	०	,,
,,	,,	१२	पक्के पुलसे	०	,,	,,
,,	गोवर्धन	१३		०	,,	,,
,,	राधाकुण्ड	१५		०	,,	,,
,,	नन्दगाँव	२३		,,	,,	,,
,,	बरसाना	२८		,,	,,	,,
,,	रावल	४		०	,,	,,
,,	शान्तनुकुण्ड	४		०	,,	,,

नोट—नन्दगाँव या बरसानेको रेलसे जानेवाले कोसी अथवा छाता स्टेशनपर उतरें, वहाँसे तागे आदिसे जावें, सड़क कच्ची है। वैसे मथुराजीसे सीधी मोटर लारी भी प्राय रोज जाती है।

लेखकपरिचय

श्रीमाद्देवाचार्यो विप्र सात्त्वतो शार्मिलु ।
विष्णुस्वामिपदानुगोस्वामी कृष्णभक्ताग्र्य ॥ १ ॥
(मन्दुर) आसीच्छ्रीमच्छीलचन्द्राभिधान
पुत्रस्तस्य श्रीसुखानन्दनामा ।
तस्यापि श्रीगोमकृष्णो बभूव
सत्पुत्रोऽहं लक्ष्मण कारकोऽस्य ॥ २ ॥
चातुर्यमस्ति गणना विदुषां समाजे
श्रेष्ठे कुले जनिरथो महत ममाय ।
किञ्चिद्यदाथ हरिभक्तिलवस्तदित्थ
मर्थं विना सकलसम्पदनुमदोऽहो ॥ ३ ॥
सत्यमा जगदेषणा हि सकला मोहोऽपि कौटुम्बिकः
प्रध्वस्तो ममतास्पदं तु किमपि ह्यत्र चास्त्येव न ।
दासत्वेन हरेरहङ्कृतिरपि प्राणान्ति शुद्धोऽभव
श्रीमत्कृष्णपदारविन्दयुगलप्राप्तौ स्पृहा केवलम् ॥ ४ ॥